जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२४ अंक -0६ फरवरी २०२२ **सम्पादक-बिजय कुमार जैन** पृष्ठ ४० मूल्य - १५० रूपए प्रति

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

१३० करोड़ भारतीयों का है आव्हान

निवेदक

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Remove INDIA Name From the Constitution

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

अभी तक प्रकाशित
राजस्थान के ऐतिहासिक विशेषांक

पधारो म्हारे देश

मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

नीम लगायें पर्यावरण बचाये

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को केवल भारत ही बोलेंगे

आज से इंडिया नहीं बोलेंगे

भारत नाम की आजादी के लिए

India को संविधान से हटाने के लिए

मुक्त हस्त आर्थिक सहयोग करें व सरकारी नियमों के अनुसार रियायत प्राप्त करें

हर महीने होने वाले खर्चों के लिए आप भी दान दाता बन सकते हैं

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

80G व 12A भारतीय आयकर नियमानुसार पंजीकृत

हमारा बँक खाता क्र.

HDFC BANK SAVING BANK A/C No. 50100479479181

IFSC CODE : HDFC0000592 BRANCH NAME : MAROL, ANDHERI EAST, MUMBAI, BHARAT

निवेदक

मैं भारत हूँ फाउंडेशन परिवार

(अंतर्राष्ट्रीय संस्थान)

अगला अंक

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' ना कि ~~इंडिया~~ पर प्रभुत्वों के विचार

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

एक देश है फिर नाम क्यों है अनेक
भारत - इंडिया
भारत को केवल भारत ही बोले
मैं भारत हूँ फाउंडेशन का यह है आव्हान

Prathmesh Gold

Specialist in Bangles

204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

!!जय भारत!! भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101 !!जय भारत!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए'

Remove INDIA From Constitution

!!भारत माता की जय!! भारतीय संविधान से INDIA हटाया जाए !!भारत माता की जय!!

बिजय कुमार जैन - भ्रमणध्वनिः ९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

भारत की राजधानी दिल्ली में हुआ 'जय भारत' राजनीतिक मंच का उद्घोष। हम सभी दिल्ली रहवासी चाहते हैं कि जैनों के साथ वैश्य समाज मिलकर राजनीतिक मंच 'जय भारत' के नाम से चुनाव लड़ें और देश की गरिमामयी संसद में जाकर भारत को अहिंसामयी बनाएं, भ्रष्टाचार मुक्त करवाएं और विश्व में 'भारत' नाम को गुंजायमान करवाएं ताकि हर कोई बोले 'मैं भारत हूँ'। मंच पर उपस्थित दिल्ली रहवासी नमह, कमल कुमार जैन, राजीव जैन 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन के साथ हैं दिल्ली निवासी वेद प्रकाश शास्त्री 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की अंतरराष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा संजय लड्ढा व दिल्ली निवासी विकास जैन आदि।

बिजय कुमार जैन
अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष
मैं भारत हूँ फाउंडेशन'

भारत को केवल 'भारत' ही बोलेंगे इंडिया नहीं अभियान को समर्थन देते हुए दिल्ली स्थित लक्ष्मी नगर में MCD चुनाव के प्रत्याशी कमल कुमार जैन के साथ नवनीत गर्ग, राजीव जैन, 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन के साथ हैं गजल कपूर व मैं भारत हूँ फाउंडेशन की अंतरराष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा संजय लड्ढा।

श्री कमल कुमार जैन ने कहा कि 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' परिवार द्वारा निर्मित 'भारत नाम सम्मान चलित झांकी' अब नहीं रुकेगी, दिल्ली के हर गलियों में घूमेगी और हर बच्चा कहेगा 'मैं भारत हूँ' इंडिया नहीं और 'जय भारत' से पूरी दिल्ली गुंजायमान होगी।

दिल्ली के जमुना पार स्थित ७२ दिगम्बर जैन मंदिरों के महामंत्री सुनील जैन के निवास पर उनका सम्मान णमोकार महामंत्र से करते हुए कमल कुमार जैन, राजीव जैन के साथ 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन व कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा संजय लड्ढा।

भारत का हर जैन युवा अब राजनीति क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता है और दिल्ली के साथ पूरा विश्व अहिंसामयी बने इसका समर्थन कर रहा है। चित्र में दिल्ली स्थित कैलाश नगर रहवासी के युवा कह रहे हैं कि 'मैं भारत हूँ' इंडिया नहीं और अब हम जब भी किसी से संवाद करेंगे 'जय भारत' ही बोलेंगे।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२४ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२४, अंक ६, फरवरी २०२२

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत को केवल 'भारत' ही बोलेंगे इंडिया नहीं

विश्व में फैले जैन धर्मावलंबियों के द्वारा की गई शुरुआत 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए इंडिया नहीं' गुंजायमान हो रहा है, हर कोई कह रहा है कि मेरे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए 'इंडिया' नाम को तो भारतीय संविधान से विलुप्त करवा देना चाहिए, साथ ही जब भी हम किसी से मिलेगें 'जय भारत' के साथ एक दूसरे का अभिवादन करेंगे!

मित्रों! 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान की शुरुआत १२ साल पहले 'मैं भारत हूँ' पत्रिका के प्रकाशन के साथ शुरू कर दी थी। विगत १२ सालों में बहुत ही संघर्ष झेला, विभिन्न भारतीय समाज के लोगों से मिला, कई विषयों की जानकारी प्राप्त की, भारत के इतिहास को पढ़ा और एक ही बात महसूस की, कि जब किसी इंसान के नाम २ नहीं हो सकते तो हमारे देश का नाम २ क्यों 'भारत और इंडिया'। आइए हम सब मिलकर विश्व के महान संत व तपस्वी दिगम्बराचार्य विद्यासागर जी महाराज साहब की इच्छा 'भारत को केवल 'भारत' ही बोलेंगे, इंडिया नहीं' को विश्व में गुंजायमान करें और भारत को केवल 'भारत' ही बोलें।

मित्रों! अभी सोशल मिडिया और अखबारों में एक संवाद चल रहा है, सम्मेद शिखरजी पहाड़ का, कि आज दूसरी जातियों के द्वारा सम्मेद शिखर पहाड़ पर कब्जा किया जा रहा है, मिली जानकारी के अनुसार ऐसा कुछ भी नहीं है, सम्मेद शिखर जी पहाड़ हम जैनियों के लिए आराध्य है, पूजनीय है, तीर्थ भूमि है और वो जैनियों की ही रहेगी। बस एक निवेदन करता हूं कि हम सभी मिलकर दिगम्बर-श्वेताम्बर के साथ केवल 'जैन' बने रहें, सभी एक दूसरे का सम्मान करें।

निवेदन करता हूं आपस में बैठें, सर्व सम्मति से विवादों को सुलझाएं और मिलकर कहें 'हम सभी जैन हैं, जिन धर्मावलंबी' हैं।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि -आचार्य महाश्रमण

मनुष्य दुनिया का एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसके पास पांच इंद्रियां हैं। वह आँख से देखता है, नाक से सूंघता है, कान से सुनता है, जिह्वा से चखता है और त्वचा से स्पर्श करता है। इनके अतिरिक्त उसके पास एक मन है जो इंद्रियों द्वारा गृहीत वस्तुओं पर चिन्तन-मनन कर सकता है। पांचों इंद्रियों में यों तो हर इंद्रि की अपनी उपयोगिता है पर चक्षुरिन्द्रिय का मनुष्य के जीवन में सर्वाधिक महत्व है और सर्वाधिक उपयोग है। कहा भी जाता है कि जिसके पास आँखें नहीं होती उसके लिए संसार सूना हो जाता है। जिन व्यक्तियों के पास आँखें नहीं होती उन्हें बोलचाल की भाषा में अंधा कहा जाता है और परिष्कृत भाषा में सूरदास या प्रज्ञाचक्षु कहा जाता है।

आँख का उपयोग

आँख होना एक बात है और उसका उपयोग करना दूसरी बात है। जिनके पास आँखें नहीं हैं उनके लिए उपयोग अनुपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। जो चक्षुष्मान हैं, जिनमें देखने का सामर्थ्य है, उनके लिए विचारणीय है कि वे आँखों का सम्यक उपयोग करते हैं या दुरुपयोग करते हैं। एक व्यक्ति संतों के दर्शन करता है, अच्छा साहित्य पढ़ता है, धार्मिक पुस्तकें पढ़ता है, अच्छे दृश्यों का अवलोकन करता है, अनिमेष प्रेक्षा करता है यह आँखों का सदुपयोग है। आँखों का दुरुपयोग भी हो सकता है। एक व्यक्ति आँखों से किसी को बुरी दृष्टि से देखता है, खराब दृश्य देखता है, अश्लील साहित्य पढ़ता है, जीवन को पतन की ओर ले जाने वाले दृश्यों को देखता है यह आँखों का दुरुपयोग है विचारणीय बात यह है कि जिनको आँखें प्राप्त है वे उनका यथार्थ मूल्यांकन करते हैं या नहीं? आँखों का मूल्य उनसे पूछा जाए, जिनके पास आँखें नहीं है। चक्षुहीन व्यक्ति की दुनिया बहुत छोटी होती है।

जैसी दृष्टि बैसी सृष्टि

महात्मा बुद्ध के पास कुछ व्यक्ति आए और बोले-भन्ते! हमारे गांव में एक ऐसा व्यक्ति है जो सूर्य को नहीं मानता, प्रकाश को नहीं मानता। हम सबने उसको बहुत समझाया कि भैया! सूरज होता है, प्रकाश होता है, सुबह होती है पर वह तो किसी भी शर्त पर यह मानने के लिए तैयार नहीं है।

बुद्ध ने पूछा-उसके पास आँखें हैं या नहीं ?

भन्ते! आँखें तो नहीं हैं। वह अन्धा है।

बुद्ध ने समाधान की भाषा में कहा-फिर तुम मनाने की चेष्टा क्यों करते हो ? उसे वैद्य के पास ले जाओ। आँखों का इलाज करा दो। आँखों का आवरण हट जाएगा, रोशनी आ जाएगी तो स्वयं ही मानने लग जाएगा। ऐसा ही किया गया। दृष्टि मिलते ही उस व्यक्ति ने स्वतः यथार्थ का बोध कर लिया। कई बार दृष्टि प्राप्त व्यक्ति भी रंगीन चश्मा लगाकर यथार्थ का बोध नहीं कर पाता। जिस रंग का चश्मा पहन लेता है उसे दुनिया वैसी ही दिखाई देती।

पीलिये के रोगी को प्रत्येक वस्तु में पीलापन नजर आता है। अपेक्षा है व्यक्ति यथार्थ दर्शन का प्रयत्न करें। जो जिस रूप में है उसे उसी रूप में स्वीकार करें। अधिक जानना भी ठीक नहीं। कम जानना भी ठीक नहीं। अधिक जानना और कम जानना दोनों. ही अयथार्थ हैं। जो वस्तु जिस रूप में है, उसे उसी रूप में जानना सम्यक ज्ञान होता है।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्यश्री महाश्रमण ने ५० हजार किमी की पदयात्रा कर रचा इतिहास, जगाई अहिंसा की अलख

अहिंसा यात्रा के प्रणेता तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने पावन कदमों से पदयात्रा करते हुए ५०,००० किलोमीटर के आंकड़े को पार कर एक नए इतिहास का सृजन कर लिया। आज के भौतिक संसाधनों से भरपूर युग में जहां यातायात के इतने साधन हैं, व्यवस्थाएं हैं, फिर भी भारतीय ऋषि परंपरा को जीवित रखते हुए महान परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी जनोपकार के लिए निरंतर पदयात्रा कर रहे हैं। भारत के २३ राज्यों और नेपाल व भूटान में सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति की अलख जगाने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रेरणा से प्रभावित होकर करोड़ों लोग नशामुक्ति की प्रतिज्ञा स्वीकार कर चुके हैं।

देश की राजधानी दिल्ली के लालकिले से सन् २०१४ में अहिंसा यात्रा का प्रारंभ करने वाले आचार्यश्री ने न केवल भारत, अपितु नेपाल, भूटान जैसे देशों में भी मानवता के उत्थान का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आचार्यश्री देश के राष्ट्रपति भवन से लेकर गांवों की झोंपड़ी तक शांति का संदेश देने का कार्य कर रहे हैं। यात्रा के दौरान राजनेता हो या अभिनेता, न्यायाधीश हो या उद्योगपति, सेना के जवान हो या पुलिस के, विशिष्ट जनों से लेकर सामान्य जन तक जो भी आचार्यश्री के संपर्क में आता है, आपसे प्रेरित होकर अहिंसा यात्रा के संकल्पों को जीवन में उतारने के लिए प्रतिबद्ध हो जाता है। आचार्यश्री की प्रेरणा से हर जाति, धर्म, वर्ग के लाखों-लाखों लोगों ने इस सुदीर्घ अहिंसा यात्रा में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को स्वीकार किया है।

अहिंसा यात्रा के प्रारंभ से पूर्व ही आचार्यश्री महाश्रमणजी ने स्वपरकल्याण के उद्देश्य से करीब ३४,००० किलोमीटर का पैदल सफर कर लिया था। बारह वर्ष की अल्पआयु में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी के शिष्य के रूप में दीक्षित तथा प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के उत्तराधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित आचार्यश्री महाश्रमण ने अब तक भारत के दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, असम, नागालैण्ड, मेघालय, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, उड़ीसा, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, पांडिचेरी, आंध्रप्रदेश, तेंलगाना, महाराष्ट्र एवं छत्तीसगढ़ राज्य तथा नेपाल व भूटान की पदयात्रा कर लोगों को सदाचार की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया और उन्हें ध्यान, योग आदि का प्रशिक्षण देकर उनकी दुर्वृतियों के परिष्कार का पथ भी प्रशस्त किया। हृदय परिवर्तन पर बल देने वाले आचार्यश्री ने अपनी यात्रा के दौरान विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं के माध्यम से भी जनता को प्रशिक्षित किया।

कच्छ से काठमाण्डू और कांजीरंगा से कन्याकुमारी तक ही नहीं, पाकिस्तान और बांगलादेश की सीमा से लगे भारत के सीमान्त क्षेत्रों में भी आचार्यश्री की पदयात्रा का प्रभाव देखा जा सकता है। आचार्यश्री की पदयात्राएं असाम्प्रदायिक संदेश के साथ होती हैं, यही कारण है कि हर जाति, वर्ग, क्षेत्र, संप्रदाय की जनता की ओर से आचार्यश्री के मानवता को समर्पित अभियान को व्यापक समर्थन प्राप्त होता है।

यात्रा के दौरान जहां बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा, बाबा रामदेव, श्री श्री रविशंकर, स्वामी अवधेशानंद गिरि, स्वामी निरंजनानन्द, मौलाना अरशद मदनी जैसे विभिन्न धर्मगुरुओं ने आचार्यश्री से मिलकर उनके जनकल्याणकारी अभियान के प्रति समर्थन प्रस्तुत किया, वहीं राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम, प्रणव मुखर्जी, प्रतिभा पाटिल, नेपाल की राष्ट्रपति विद्या भंडारी, प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली, पूर्व राष्ट्रपति रामवरण यादव, पूर्व प्रधानमंत्री सुशील कोइराला, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत, सुरेश भैया जी जोशी, अमित शाह, लालकृष्ण आडवाणी, पीयूष गोयल, राजनाथ सिंह, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, पी चिदंबरम आदि अनेकों राजनेताओं आदि भी आचार्यश्री के सान्निध्य में पहुंचे और उनके द्वारा किए जा रहे समाजोत्थान के महत्त्वपूर्ण कार्यों में अपनी भी संभागिता दर्ज कराई। इसके साथ-साथ नीतिश कुमार, अशोक गहलोत, नवीन पटनायक, सर्वानंद सोनोवाल, ममता बनर्जी, येद्दुयिरप्पा, पलानी स्वामी, अरविन्द केजरीवाल आदि कई मुख्यमंत्रियों व राज्यपालों सहित कई विशिष्ट लोगों ने भी अहिंसा यात्रा में अपनी सहभागिता की।

आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी पदयात्राओं के दौरान प्रतिदिन १५-२० किलोमीटर का सफर तय कर लेते हैं। जैन साधु की कठोर दिनचर्या का पालन और प्रातः चार बजे उठकर घंटों तक जप-ध्यान की साधना में लीन रहने वाले आचार्यश्री प्रतिदिन प्रवचन के माध्यम से भी जनता को संबोधित करते हैं। इसके साथ-साथ आचार्यश्री के सान्निध्य में सर्वधर्म सम्मेलनों, प्रबुद्ध वर्ग सहित विभिन्न वर्गों की संगोष्ठियों आदि का आयोजन होता रहता है, जो समाज सुधार की दृष्टि में अत्यन्त लाभप्रदायक सिद्ध होती हैं। प्रलम्ब पदयात्रा में आचार्यश्री के साहित्य सृजन का क्रम भी निरन्तर चलता रहता है। आचार्यश्री के नेतृत्व में ७५० से अधिक साधु-साध्वियां और हजारों कार्यकर्ता भी देश-विदेश में समाजोत्थान के महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न हैं।चरैवेति-चरैवेति सूत्र के साथ गतिमान आचार्य श्री की यह ५०,००० किलोमीटर की यात्रा अपने आप में विलक्षण है। आंकड़ों पर गौर करें तो यह पदयात्रा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की दांडी यात्रा से १२५ गुना ज्यादा बड़ी और पृथ्वी की परिधि से सवा गुना अधिक है। यदि कोई व्यक्ति इतनी पदयात्रा करे तो वह भारत के उत्तरी छोर से दक्षिणी छोर अथवा पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर तक की १५ बार से ज्यादा यात्रा कर सकता है।

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जैन संघ ट्रस्ट गणेश बाग श्री संघ के तत्वावधान में कर्नाटक गज केसरी गणेशलालजी महाराज की ६०वीं पुण्यतिथि मनाई

युगों-युगों तक चिरस्मरणीय रहेंगे गुरु गणेशीलाल महाराज : साध्वी डॉ. रुचिकाश्री

बैंगलोर: श्वेताम्बर स्थानकवासी बावीस संप्रदाय जैन संघ ट्रस्ट, गणेश बाग श्री संघ, बेंगलूरु के तत्वावधान व साध्वीवृंद डॉ. रुचिकाश्री, पुनितज्योति, जिनाज्ञाश्री के पावन सान्निध्य में गुरु गणेश जैन स्थानक में कर्नाटक गज केसरी गणेशलालजी महाराज की ६०वीं पुण्यतिथि आयम्बिल एवं सामायिक दिवस के रूप में मनाई गई। साध्वी डॉ. रुचिकाश्री ने इस दौरान अपने प्रवचन में कहा कि तपोयोगी श्रमण की साधना स्वयं ही चमत्कार है, उसकी निस्पृहता, कठोर-तितिक्षा, परिषह जेयता और सुख दुःख में स्थितप्रज्ञता संसार के लिए एक अजूबा है, आश्चर्य है। परन्तु यही तो साधक कि कसौटी है। गुरुदेव सिद्ध श्रण तपस्वीराज गणेशलालजी महाराज उच्च कोटि के संत थे, कठोर संयमी थे, परन्तु अत्यंत दयालु और करुणाशील भी थे।

गणेशलालजी महाराज इस युग के एक महान संत रहे हैं। जो युग युग तक चिर स्मरणीय बन जाते हैं। अहिंसा, संयम और तप यही धर्म है। जिसका मन सद्धर्म में रहता है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। ऐसे ही थे गुरु गणेशलालजी महाराज। आपकी प्रेरणा से कई गौशालाएं प्रारंभ हुई जो आज भी सुन्दर ढंग से संचालित हैं। साध्वी जिनाज्ञाश्री ने इस मौके पर गुरु भक्ति गीत को प्रस्तुत करते हुए अपने उद्बोधन में कि ऐसे संत अपने गुणों और संस्कारों कि सौरभ से इस पृथ्वी मंडल को सुवासित कर जाते हैं।

आप का जीवन में सत्य और स्वाभिमान का तेज उनके भाल पर चमकता रहता था। संयम ग्रहण के क्षण से ही वे तप के मार्ग पर चल पड़े। उन्होंने दस वर्ष तक एकासन तप किया और विशेष आत्म शुद्धि के लिए एकान्तर तप प्रारंभ कर दिया जो अपने अंतिम दिन तक निरंतर तपस्या करते रहे। इसलिए उन्हें घोर तपस्वी एवं तपस्वीराज से भी जानते हैं।

धर्म सभा का संचालन गणेश बाग संघ के अध्यक्ष लालचंद मांडोत ने किया। इस अवसर पर सिद्धार्थ नगर मैसूर संघ के अध्यक्ष प्रकाशचंद पितलिया सहित अन्य पदाधिकारियों ने साध्वी डॉ. रुचिकाश्री जी का आगामी सन २०२२ का चातुर्मास सिद्धार्थ नगर मैसूर में करने की विनती स्वीकारने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने पहुंचकर सर्वोच्च जैन साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया

जम्बुद्विप हस्तिनापुर स्थित जम्बूद्वीप स्थल पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने पहुंचकर सर्वोच्च जैन साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने योगी जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए कहा कि अयोध्या तीर्थ को आकाश की ऊंचाईयों तक लेकर जाना है एवं प्रदेश के लिए अभी बहुत कार्य करना है। पूज्य माताजी ने योगीजी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप १०० वर्ष तक जियें एवं इसी प्रकार से उत्तरप्रदेश का विकास एवं प्रदेश की जनता के कल्याण के लिए कार्य करते रहें।

प्रबंध मंत्री श्री विजय कुमार जैन ने बताया कि इसी श्रृंखला में संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने माननीय योगी जी को वस्त्र एवं पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। पूज्य माताजी ने साहित्य प्रदान किया एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने जम्बूद्वीप तीर्थ की प्रतिकृति का प्रतीक चिन्ह दिया एवं कुलाधिपति श्री सुरेशचंद जैन-मुरादाबाद, श्री अनिल कुमार जैन संघपति-दिल्ली, श्री मनोज जैन, श्री राकेश जैन-मेरठ', प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप, डॉ. जीवन प्रकाश जैन-जम्बूद्वीप, अक्षत जैन-मुरादाबाद ने प्रतीक चिन्ह देकर माननीय मुख्यमंत्री जी का अभिनंदन एवं स्वागत किया। जम्बूद्वीप तीर्थ का मनोरम दृश्य देखकर माननीय मुख्यमंत्री जी गदगद हो गये एवं हस्तिनापुर तीर्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

-पियुष नरेंद्र जैन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!

भारतीय संसद में भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए की आवाज उठाएंगे गरिमामय सांसद -आचार्य प्रज्ञा सागर जी

माननीय सभापति महोदय जी

कालखंडों की अनवरत शृंखला में सदैव ज्ञान गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हमारा देश भारतवर्ष आज भी अपने नामकरण के आधार को तलाश रहा है। हमारे देश का नाम भारत कब, क्यों और कैसे पड़ा इस विषय पर आज भी सत्य को नकारा जा रहा है। वैदिक, पौराणिक, पुरातत्वविदों, लेखकों, इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं धर्म गुरुओं के प्रमाण युक्त सर्वमान्य लेखादि के सत्य को स्वीकार करने में हिचकिचाहट क्यों है। संस्कृति के चार अध्याय' में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है कि भारतवर्ष जिस भरत के नाम पर पड़ा, वह तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र ही थे।

उड़ीसा की उदयगिरि खंडगिरि गुफाओं में सम्राट खारवेल के उत्कीर्ण लेख प्राकृत भाषा में भी भरदवस्स का उल्लेख है।

इस सदन सभा के माध्यम से मैं एक प्रश्न और पूछना चाहता हूँ कि, हमारे देश के २ नाम क्यों है? **भारत और इंडिया**। हमारे देश की संस्कृति भारतीय है, इसलिए हम चाहते है कि हमारे देश का नाम एक ही हो सिर्फ ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से भारत।

आचार्य प्रज्ञसागर जी प्रेरणा से 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' ने 'मैं भारत हूँ' यह राष्ट्रव्यापी अभियान चला रखा है। भारत सरकार इस विषय पर गम्भीरता से विचार करे।

माननीय सभापति जी भगवान महावीर स्वामी जी का २५५०वाँ निर्वाणोत्सव का सन २०२३ से शुभारम्भ हो रहा है। भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिये क्या योजना बनाई है। इस विषय से भी भारत सरकार सबको ज्ञात कराया जाये।

धन्यवाद!

फरवरी-२३ में होगा शीतलतीर्थ रतलाम का पंचकल्याणक

रतलाम स्थित श्री दिगम्बर जैन धर्म स्थल-शीतलतीर्थ (धामनोद) पर आगामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव २०२८ आयोजित किया जाना है। इस वृहद् आयोजन को लेकर तीर्थक्षेत्र पर दिनांक ०९.०१.२०२२ को बैठक आयोजित की गई तथा आये हुए अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यकम का शुभारम्भ आचार्य श्री १०८ योगीन्द्रसागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन एवं मंगलाचरण से किया गया। बैठक की प्रस्तावना पर प्रकाश डालते हुए शीतलतीर्थ की अधिष्ठात्री ब्र. (डॉ) सविता दीदी ने बताया कि अगले वर्ष २०२३ में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य श्री विशुद्धसलागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में आयोजित किए जाने की योजना है। इस भव्य आयोजन के दौरान १०८ पिच्छियों का सान्निध्य समस्त धर्मप्रेमी बंधुओं को प्राप्त होने की संभावना है। आर्ष परम्परा का निर्वहन करते हुए अतिशयकारी शीतल तीर्थक्षेत्र पर महिलाएँ भी अभिषेक कर सकती हैं तथा यहाँ पर जैन संतों, त्यागियों के ठहरने एवं आहार की पूरी व्यवस्थाएँ संचालित की जा रही हैं। उन्होंने आचार्य श्री १०८ योगीन्द्रसागरजी महाराज के बारे में बताते हुए कहा कि आचार्य श्री ने कहा था कि मैं इस पावन क्षेत्र में रहूँ या न रहूँ परंतु मेरी तप शक्ति यहाँ शीतल तीर्थ में सदैव विद्यमान रहेंगी। आचार्य श्री की मंशा थी कि क्षेत्र पर कैलाश पर्वत का निर्माण हो तथा ७२ जिनालय बनाएँ जाये। आज उनके स्वप्नों को उनके शिष्य आकार प्रदान कर रहे है। शीतल तीर्थ का जैसा नाम है वैसी ही शीतलता यहाँ पर पधारे श्रावकों को मिलती है।

आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी की प्रेरणा से स्थापित यह दिगम्बर जैन तीर्थ के प्रति सभी की श्रद्धा है। क्षेत्र के प्रति रतलाम की जैन समाज का विशेष दायित्व है। श्री हसमुख जैन गाँधी (इन्दौर) ने कहा कि भव्यता के साथ सादगी भी पंचकल्याणक की विशेषता होगी समर्पण की भावना से हम काम करेंगे तो सफल होंगे। दि. जैन ग्लोबल महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जमनालाल हपावत (मुम्बई) ने कहा कि जन्म कल्याणक महोत्सव से पुण्य अर्जित होता है तथा दिगम्बर जैन धर्म की परम्परा यहाँ जीवित रहेगी। श्री सुरेश संघवी (बांसवाडा) ने कहा कि गुरुदेव ने प्राप्त सिद्धियों से अनेकों लोगों का उद्धार किया था। कार्यकम में विशेष रूप से पधारे रतलाम के पुलिस अधीक्षक श्री गौरव तिवारी ने कहा कि जैन धर्म प्रकृति के सबसे अधिक नजदीक है जो बात आज विज्ञान बता रहा है वह जैनागम हमें सदियों पहले ही बता चुका है। हमें कर्मकांड तथा पाखंड कम करना चाहिए। अब शीतल तीर्थ श्रद्धा का केन्द्र बन चुका है गुरुदेव की आशीष रूपी उपस्थिति हमें धर्मानुचरण की प्रेरणा देते हैं।

-डॉ. सविता जैन
अधिष्ठात्री

पवित्र जैन तीर्थ स्थल आस्था के केन्द्र पिकनिक स्पॉट ना बने

झारखंड के गिरीडीह जिले में स्थित पारसनाथ की पर्वत श्रृंखला जैन धर्मावलम्बियों के सबसे पवित्र धार्मिक स्थलों में से एक है। छोटा नागपुर पहाड़ पर स्थित एक पहाड़ी है जो विश्व का सबसे महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल भी है। श्री सम्मेदशिखर जी के रूप में चर्त्तित इस पुण्य क्षेत्र में जैन धर्म के २४ में २० तीर्थकरों (सर्वोच्च जैन गुरूओं) ने मोक्ष की प्राप्ति की। यही से २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने भी निर्वाण प्राप्त किया था। १३५० मीटर ऊँचा यह पहाड़ झारखंड का सबसे ऊँचा स्थान भी है। शिखरजी जैन धर्म के अनुशासियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहां लाखों की संख्या में जैन धर्मावलम्बी आते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में यहा पर तीर्थंकरों और तपस्वी, सन्तो ने कठोर तपस्या और ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया। यही कारण है कि जब सम्मेदशिखर तीर्थ यात्रा शुरू होती है तो हर तीर्थयात्री का मन तीर्थंकरों का स्मरण कर अपार श्रद्धा, उत्साह और खुशी से भरा होता है।

देश के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान धार्मिक आस्था के केन्द्र पर जहां श्रद्धालु अपने को धन्य मानते हैं। वहीं आज की युवा पीढ़ि के सिरफिरे व मनचले, असामाजिक तत्व यदि मौज करते व्यमिचार में लिप्त, मंदिरा सेवन करते हुए, अपनी गर्ल्सफ्रेन्डस के साथ नियमों व कानूनों को ताक में रख दें। उसे देखकर आप क्या कहेगें? अभी हाल ही के कुछ दिनों पूर्व की घटना है। जहां देश के तीर्थराज कहे जाने वाले पार्श्वनाथ की सीढियों के नीचे दूसरे सम्प्रदाय के लोगों ने अपने ओछेपन का नमूना प्रस्तुत किया। ये वे असामाजिक तत्व हैं जो हर वर्ष नया साल मनाने के नाम पर नए स्थानों की खोज करते है। आधुनिकता की चकाचौध में केवल व केवल इन्वालमेन्ट के साथ अपनी किसी गर्ल्सफ्रेन्डस को साथ लेकर आते हैं। सभी मान मर्यादा को ताक पर रखते हुए रंगेलिया मनाते हुए अश्यासी के तालाब में डूब जाना चाहते हैं। अवैध तरीके अनिति की हुई राशि कर गलत तरीके से प्रयोग करते हैं। मांस मदिरा और तरह-तरह को व्यसन का इस्तेमाल करते है। खुद सेवन करते है और अपनी सहभागिता साथी के भी इसका आदि बनाकर पवित्र स्थानों की गरिमा को खंडित करना चाहते हैं। टी.वी. पर देखकर इस घटना पर यकीन नहीं आया। चूंकि मैं स्वयं अनेक वर्षो से सम्मेद शिखर जी के दर्शन हेतु जाता ही रहा हूँ। ऐसा वहा कुछ होगा ये मेरी समझ से परे ही थीं। मैं सोच भी नहीं पाया कि अगले ही दिन महालक्ष्मी टी.वी. चैनल पर व लोकल अखबार उत्कल मेल समाचार ने मेरे रौगटे खड़े कर दिए। पूरा का पूरा वृतान्त जब प्रकाशित हुआ व टी.वी. पर दिखाया तो आंखे फटी की फटी रह गई। जिसका जिक्र मैं अपने पाठकों के समक्ष उद्धरित करने में कोई बुराई नहीं समझता। गिरडीह: जैनियों के विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल मधुवन में मंगलवार को मांसाहार एवं मदिरावान के खिलाफ विशाल विरोध जुलुस का आयोजन किया गया। जो मधुवन सभी मुल्य मार्गों से गुजरना हुआ मधुबन माना परिसर तक गई। जहां लोगो ने माना प्रभारी दिलशान विरूता को एवं ज्ञापन सौंपकर इस पर रोक लगानें की माँग की। सोमवार को पश्चिमी बंगाल से आए पर्यटकों ने मकर संक्रांन्ति मेला मैदान में खुल्ले रूप से मांस बना रहे थे। जिसका जैन समाज के लोगों के साथ-साथ स्थानीय लोगों ने पुरजोर विरोध किया।

इन सिरफिरों युवाओं को तो इस बात की समझा देनी चाहिए कि पवित्र तीर्थ स्थल पिकनिक मनानें की कोई जगह नहीं होती। पिकनिक व नया साल मनाना है तो कही जल प्रपात झरने को ढुंढे। किसी अभयारण्य के नवदीक जाऐं, कोई ऐतिहासिक किला या इमारत को ढूंढे। किसी चिड़ियाघर के नजदीक रमण करें। किसी राष्ट्रीय धरोहर के स्थान की जानकारी से आदि-आदि। आज की युवा पीढ़ि को यह बोध व इसे किन तत्वों ने प्रेरित किया है? वर्तमान युवा पीढ़ि जिस परिवेश में जी रही है वह ही उसकी प्रेरणा है। वह सब कुछ तत्काल मागना चाहती है।

कवि तुलसीदास की दो पंक्तियां याद आती है 'साधो, देखो जग बौराना साँची कही तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।' याने सच कोई सुनना ही नहीं चाहता और हम सब सत सुनकर करेगें भी क्या? **-डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन**
शिक्षाविद् - मेरठ

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से प्रियंका गांधी ने लिया आशीर्वाद

जंबूद्वीप हस्तिनापुर तीर्थ पर सर्वोच्च जैन साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से कांग्रेस महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी ने मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। व्यक्तिगत चर्चा में पूज्य माताजी ने प्रियंका जी को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और राजीव गांधी जी के साथ पूर्व में हुई मुलाक़ात के संस्करण भी सुनाएँ। प्रियंका गांधी ने भी अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पुनः अपने बच्चों के साथ पूज्य माताजी के दर्शन की भावना ज़ाहिर की।

साथ में उपस्थित राजस्थान के उपमुख्यमंत्री मा. श्री सचिन पाइलट एवं हस्तिनापुर से काँग्रेस प्रत्याशी अर्चना गौतम ने भी पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

- डॉ. जीवन प्रकाश जैन,
जंबूद्वीप

प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान जगदगुरु श्री रेणुकाचार्य स्कूल में विद्या सुरक्षा योजना

मारुति मेडिकल ने कन्नड़ बच्चों के लिए अक्षय सेवा आधारित विद्या सुरक्षा योजना के तहत प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान जगदगुरू श्री रेणुकाचार्य स्कूल में हजारों छात्रों को मुफ्त नोटबुक वितरित किए गए। स्वंय गोसेवक महेंद्र मुणोत ने राजाजीनगर के डॉ. राजकुमार रोड स्थित एक बड़े स्कूल के बच्चों को किताबें बांटी।

मुणोत मंच पर बोले 'स्कूल जाति और पंथ से रहित एक पवित्र मंदिर है। बच्चे अमीर और गरीब के भेदभाव के बिना एक साथ सीखने के लिए शिक्षाविदों की वर्दी की पूजा करते हैं।'

कर्नाटक रक्षक वैदिक सांस्कृतिक संगठन द्वारा चामराजपेट स्थित अम्बरीश ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, युवा समाजसेवी श्री महेन्द्र जी मुणोत को सम्मानित करते हुए संगठन के सदस्यगण, यह जानकारी श्री भूपेन्द्र एस. भानावत ने एक विज्ञप्ति में दी।

एम. सी. लेआउट क्रिकेटर्स द्वारा बालगंगाधर स्वामी खेल मैदान में आयोजित शॉट पिच क्रिकेट प्रतियोगिता में खिलाडियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए विशिष्ट अतिथि, युवा समाजसेवी श्री महेन्द्र जी मुणोत श्री भूपेन्द्र एस. भानावत।

बसंत पंचमी पर संबोधि धाम में श्रद्धालुओं ने किया सरस्वती महापूजन

जोधपुर: बसंत पंचमी के पावन दिवस पर कायलाना रोड़ स्थित संबोधि धाम में सरस्वती महापूजन का विराट समारोह आयोजित हुआ। राष्ट्र-संत महोपाध्याय ललितप्रभ सागर जी महाराज एवं दार्शनिक संत चन्द्रप्रभ जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस महापूजन समारोह में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पूजा के वस्त्रों में सरस्वती माता की २१ फुट ऊँची विशाल प्रतिमा का एवं मनोहारी सरस्वती माता की मूर्ति का अभिषेक एवं पूजन किया।

संबोधि धाम के महामंत्री अशोक जी पारख और सहमंत्री देवेन्द्र जी गेलड़ा ने बताया कि इस समारोह में लाभ लेने के लिए शहर भर से सैकड़ों श्रद्धालु सुबह सरस्वती पीठ पर पहुँचे। जब संतप्रवर ने माता के चमत्कारी मंत्रों का सामूहिक संगान करवाया तो माहौल भावविभोर हो उठा। जब उन्होंने पूजा की है

मैया आज थाने आणो हैं...,
मेरे सर पर रख दो मैया अपने ये दोनों हाथ
देना है तो दीजिए जनम-जनम का साथ...,
सपने में दर्शन दे गई रे इक छोटी सी गुडिया,
सोये भाग्य जगा गई से इक छोटी-सी गुडिया...

जैसे भजन गुनगुनाए तो भाई-बहिन भक्ति में झूमने लग गए।

इस अवसर पर संत ललितप्रभ जी ने कहा कि व्यक्ति लक्ष्मी पुत्र के साथ सरस्वती पुत्र भी बने। अगर जीवन में सद्ज्ञान नहीं होगा और केवल धन होगा तो धन जीवन को गलत मार्ग पर ले जाएगा। इसलिए हर व्यक्ति जीवन में प्रभु से एक ही प्रार्थना करे कि जब तक जिऊँ तब तक मति सन्मति रहे और मर जाऊँ तो गति सदगति हो जाए।

कार्यक्रम में इण्डो पब्लिक स्कूल की बालिकाओं ने सरस्वती माता की प्रार्थना गुनगुनाई। महापूजन के पश्चात् २७ दीपकों की भव्य महाआरती हुई।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Importers & Distributors
interex
floorwalk
Surfaces INDIA FLOORING PVT. LTD.

WOODEN FLOORING
CARPET TILES
OUTDOOR WOOD DECKING
OUTDOOR WOOD CLADDING
ARTIFICIAL GREEN WALL

H.O.: 14-A Paper Box House, Mahakali Caves Road, Andheri East, Mumbai-400 093
Tel.: +91-22 6695 9352 / 53
Fax : +91-22 2687 1187
J. M. Dugar - 98202 33262
Amit Dugar - 98191 92285
Sumeet Dugar - 98339 83457
Email: info@surfacesindia.co.in
Website : www. surfacesindia.co.in

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Prakash B. Rathod

RATHOD TEXTILE NETWORK

Rathod Fashions
45-47, Krishna complex, Appaji Rao Lane, C.T. Street Cross, Bangalore, Karnataka, Bharat-560002 दूरध्वनि: 080-40713300 , 22213347

Rathod Fashions
Bangalore, Karnataka, Bharat- 560002
दूरध्वनि: 080- 40814444

Rathod Saree Editions
Surat, Gujarat, Bharat-395003
दूरध्वनि: 0261 - 2330873

Poornima Silk Prints
Mumbai, Maharashtra, Bharat
दूरध्वनि: 022 - 22058899

Rathod Textile World
Surat, Gujarat, Bharat-395003
दूरध्वनि: 0261 - 2321409

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

पवन जैन
मार्गदर्शक जैन कॉन्फ्रेंस
निलिमा जैन
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, जीव दया योजना

E-10/3, Krishna Nagar, Delhi, Bharat- 110051
Ph.: (O) 011-30251423 (R) 011-40042765,
Mob. 09811041490,9811753486

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पूज्य राष्ट्रसंत के घुटने का सफल ऑपरेशन संपन्न व शातापृच्छा हेतु पधारे विशेष महानुभाव

पूज्य गुरूदेव के घुटने के ऑपरेशन की शातापृच्छा हेतु पधारे टोरेंट ग्रूप के चेयरमैन एवं श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के प्रमुख श्री सुधीरभाई मेहता

राष्ट्रसंतश्री की शातापृच्छा हेतु पधारे दादरानगर हवेली, दीव-दमन, लक्षद्वीप के प्रशासक श्री प्रफुल्लभाई पटेल

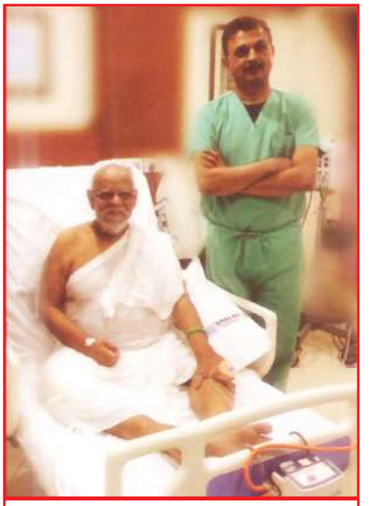

प.पू. राष्ट्रसंत गुरूदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा के घुटने का सफल ओपरेशन करने वाले अहमदाबाद शेल्बी हॉस्पिटल के डॉ. विक्रमभाई शाह गुरूदेव के सान्निध्य में

परम कृपालु देव-गुरु की असीम कृपा से राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की डॉ. विक्रमभाई शाह द्वारा शेल्बी हॉस्पीटल, अहमदाबाद में नी रिप्लेसमेंट सर्जरी सफलता पूर्वक संपन्न हुई।

ऑपरेशन के बाद पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य की शातापृच्छा एवं आशीर्वाद ग्रहणार्थ विविध महानुभाव शेल्बी हॉस्पीटल में पधारे। उनमें दादरा-नगर हवेली और दमन-दीव, लक्षद्वीप के प्रशासक श्री प्रफुल्लभाई पटेल, गुजरात राज्य के पूर्व गृहमंत्री माननीय श्री प्रदीपसिंह जाडेजा, भारत के अग्रणी उद्योगपति सुश्रावक श्रेष्ठीवर्य श्री गौतमभाई अदाणी, टोरेंट ग्रूप के सुश्रावक श्री सुधीरभाई मेहता, और अन्य भी अनेक महानुभावों ने दर्शन वंदन किया और पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हुए आशीर्वाद ग्रहण किये।

राष्ट्रसंतश्री शातापृच्छा हेतु पधारे गुजरात राज्य के पूर्व गृह मंत्री श्री प्रदीपसिंह जाडेजा

राष्ट्रसंत श्री शातापृच्छा हेतु पधारे भारत के अग्रणी उद्योगपति सुश्रावक श्रेष्ठीवर्य श्री गौतमभाई अदाणी एवं श्री विनोदभाई अदाणी

राजस्थानी भाषा और संस्कृति को दर्शाता कैलेंडर प्रकाशित

अपनी राजस्थानी भाषा और संस्कृति से जोड़े रखने और एकजुटता बनाए रखने के उद्देश्य से हमने गुजरात में प्रवासी राजस्थानियों का एक बड़ा समूह राजस्थानी भाषा और संस्कृति प्रचार मंडल, अहमदाबाद बनाया हुआ है। इसमें उद्योगपति, व्यापारी, डॉक्टर, इन्जिनियर, वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, समाज सेवी तथा अन्य नौकरीपेशा लोग और उनके परिवार जुड़े हुए हैं। इस मंडल के संस्थापक सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सुरेन्द्र सिंह पोखरणा हैं। जिनका मुल निवास स्थान उदयपुर है। किन्तु शादी-ब्याह, वार-त्यौहार हेतु राजस्थान जाते हैं अथवा हमारे राजस्थानी कैलेंडर के आधार पर राजस्थानी तिथियों के हिसाब से अपने-अपने त्यौहार मनाते हैं।

हम प्रवासी राजस्थानियों को जोड़कर अपनी राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलवाने हेतु जनमत बनाकर आवाज उठाने की अपने स्तर पर कोशिश कर रहे हैं। राजस्थान के साथ अन्य राज्यों में भी कमिटियां बनाकर भाषा और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हैं।

इसी क्रम में हम पिछले कई वर्षो से राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए राजस्थानी भाषा और संस्कृति प्रचार मंडल, अहमदाबाद के तहत् हर वर्ष राजस्थान से संबंधित विषय लेकर राजस्थानी भाषा में वहां के तीज त्यौहार, रीति-रिवाज, मेले, राजस्थान का रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार-विचार, सामाजिक, पर्यटन, वेशभूषा इत्यादि का समावेश कर भारतीय वर्ष से (चैत्र मास से) सहयोगी संस्थाओं के विज्ञापन के साथ कैलेंडर छपवाते हैं और जहां जरुरत हो वहां कैलेंडर की डिजिटल कॉपी भिजवाते हैं जिससे वे अपनी आवश्यकता के अनुसार अपने स्तर पर छपवा सकें, इस कार्य के पीछे हमारा उद्देश्य मात्र राजस्थानियों को आपस में संगठित रखना, अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़े रखना, अपनी जन्मभूमि से दूर होते हुए भी अपने तीज़-त्यौहार की तिथियां तथा अन्य सूचनाएं जान लेना है, इन सबकी वजह से हमारा कैलेंडर बहुत लोकप्रिय भी है।

इस वर्ष भी राजस्थान के विभिन्न किलों की थीम लेकर कैलेंडर छपवाया जा रहा है जो चैत्र मास से शुरू होगा।

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह पोखरणा
भ्रमणध्वनिः ९८२५६४६५१९

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
बिजय कुमार जैन जी आप आगे बढ़ें
हम सभी आपके साथ हैं...
दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
ना हम दिगम्बर-ना हम श्वेताम्बर
हम-सब जैन हैं
वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
Santosh Golechha
प्रांत अध्यक्ष। विश्व हिन्दू परिषद छत्तीसगढ़।
Mob. : 9826168811
1st Floor, Office No.10, Himalaya Complex,
Supela, Bhilai, Chhattisgarh, Bharat - 490023
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
विश्व में भारत को कब 'भारत' ही कहा जाएगा ?
बिजय जी! आप आगे बढ़ें आपके अरमान पूरे होगें
भारत को 'भारत' ही बोला जाएगा
'जैन एकता' की सफलता
हेतु शुभकामनायें
C K GOUSHAL
Mob : 9820139815
आचार्य श्री महाश्रमण
C K GOUSHAL & Co
CHARTERED ACCOUNTANTS
18, Swastik Court, 1st Pasta Lane, Colaba,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 005.
Ph : 022 - 22874944, 22843406
155, Mittal Court, 6 'A' wing, 224, Nariman Point,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 021.
Ph : 022 - 43473205/06, 22833006
e-mail ID : goushalck@yahoo.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत गौरव आचार्य श्री १०८ विशुद्ध सागर जी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री १०८ प्रणव सागर जी का झुमरीतिलैया में हुआ भव्य मंगल प्रवेश

कोडरमा: श्री १०८ प्रणव सागर जी मुनिराज का हज़ारीबाग जैन मंदिर से भव्य मंगल विहार १ फरवरी को हुआ और मुनि श्री का श्री दिगंबर जैन मंदिर कोडरमा में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। सकल जैन समाज ने भव्य मंगल आगवानी करते हुए बैन्ड बाजों के साथ शोभायात्रा में गुरु के जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश कराया। मंत्री ललित जैन सेठी ने बताया कि गुरूवर का यहाँ कुछ दिनों तक प्रवास रहेगा। कार्यक्रम में चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, हज़ारीबाग से आये भक्तों ने द्वारा करने के बाद मुनि श्री ने भव्य मंगल उद्बोधन दिया। उक्त समय जैन युवक समिति के अध्यक्ष राजीव जैन छाबड़ा और सक्रिय सदस्य अमित जैन सेठी पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। कार्यक्रम में हज़ारीबाग के मीडिया प्रभारी विजय जैन,महिला समाज की अध्यक्ष प्रेमा टोंग्या के साथ कई भक्त पधारे कोडरमा समाज के उपाध्यक्ष कमल सेठी, सुरेन्द काला, जैन युवक समिति के मंत्री सुमित जैन सेठी सहित काफी संख्या में पुरूष और महिलाओं ने कार्यक्रम में शिरकत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई, कार्यक्रम में कुशल मंच संचालन स्थानीय पंडित अभिषेक शास्त्री ने किया।

- राज कुमार जैन, अजमेरा

७३०० जैन मंदिरों की डिजिटल वेबसाइट हुई तैयार

दिल्ली: कहते हैं मुंबई पैसे वालों की, दिल्ली दिल वालों की यह बात एक दम सत्य साबित हो रही है। देव-शास्त्र-गुरू के परम भक्त व्यवहार कुशल नाम धीरज के धारी है। धीरज जीवन में आया है जैन धर्म दर्शन के प्रचार-प्रसार में अपना समय लगाया है। ऐसे हैं श्रद्देय श्री धीरज जी जैन दिल्ली।

जिनकी पूरी टीम ने मिलकर अब तक सम्पूर्ण भारत वर्ष के ७३०० जैन मंदिरों की डिजिटल वेबसाइड तैयार की है। श्री धीरज जैन ने एक स्नेह भेंट में बताया कि सम्पूर्ण भारत वर्ष के सभी तीर्थस्थानों/मंदिरों की एक संरचनात्मक तथा व्यवस्थित डिज़ीटल डायरेक्ट्री बनाई है। इसमें सभी मंदिरों और तीर्थक्षेत्रों को राज्य वार और जिले वार रखा गया है। मंदिर के नाम या किवर्ड द्वारा भी खोजा जा जकता है। प्रत्येक मंदिर के फोटोग्राफ और जीपीएस निर्देशांक के साथ एक वेबपेज समर्पित किया गया है।

प्रत्येक मंदिर जीपीएस कोडिनेट्स से जुड़ा हुआ है जिससे गुगल मैप का उपयोग करके मंदिर जी तक आराम से पहुंच सकते हैं। अब www.jainmandir.org पर ७,४०० से अधिक जैन मंदिरों/तीर्थक्षेत्रों का विवरण उपलब्ध है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में १३० करोड़ की आबादी के देश में जैनों की संख्या बहुत कम रह गई है।

यह बहुत ही गंभीर चिन्तनीय सोचनीय विचारणीय बात है। हमारे मंदिर प्राचीन ऐतिहासिकता पुरातत्वता और उसकी गरिमा बनी रहे इसी मंगल भावना से यह बहुत जरूरी है।

आप सभी से में आत्मीय अनुरोध करता हूं कि आप सभी इस परम पुनीत कार्य में यथाशक्ति जो सहयोग हो जरूर करें और श्री धीरज जैन और उनकी टीम को सहयोग दीजिए।

धीरज जैन - ९८६८४४९८९०
jainmandir.org@gmail.com

श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में आचार्य श्री ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की आठवीं मासिक पुण्यतिथि मनायी

राजगढ़ (धार): श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. पेढ़ी ट्रस्ट श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के तत्वाधान में दादा गुरुदेव की पाट परम्परा के अष्टम पट्टधर श्री मोहनखेड़ा तीर्थ विकास प्रेरक गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की आठवीं मासिक पूण्यतिथि मुनिराज श्री पीयूषचन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री चन्द्रयशविजयजी म.सा., मुनिराज श्री पुष्पेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री रुपेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जिनचन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जनकचन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जिनभद्रविजयजी म.सा. एवं साध्वी श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सद्गुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री तत्वलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सामुहिक सामायिक के साथ मनायी गई। इस अवसर पर मुनिराज श्री चन्द्रयशविजयजी म.सा. ने कहा कि आचार्यश्री सभी गुरुभक्तों का विशेष ध्यान रखते थे आपने तीर्थ के विकास में महत्ती भूमिका निभाई। आपने गुरु तत्व प्राप्त करके सभी भक्तों की आत्मा का कल्याण करने का पूरा प्रयास किया इस आठवीं मासिक पूण्यतिथि के अवसर पर आप हम सभी पर आशीर्वाद की वर्षा करें। मुनिराज श्री पुष्पेन्द्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जनकचन्द्रविजयजी म.सा. आदि ने भी उद्बोधन के माध्यम से अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। दोपहर में श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन हुआ। गौशाला में गायों को गुड़ लापसी परोसी व हरी घास, कबुतरों को गुरुभक्तों ने दाना चुगाया। कार्यक्रम में तीर्थ महाप्रबंधक अर्जुनप्रसाद मेहता विशेष रुप से उपस्थित थे।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को केवल
भारत ही बोलेंगे
~~इंडिया~~ नहीं
जय भारत!
'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
BAJRANGLAL NAHATA JAIN
भ्रमणध्वनि : ०३४३५०६१५०६
PREM KUMAR NAHATA JAIN
DHANPAT NAHATA JAIN
MOHIT NAHATA JAIN
POONAM NAHATA JAIN
DIVYA NAHATA JAIN
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
विश्व में भारत को एक दिन 'भारत' ही कहा जाएगा
बिजय जी! आप आगे बढें
आपके अरमान पूरे होकर रहेंगे
अखिलेश कुमार जैन (मुख्यमंत्री)
मो. 09837024885
विनोद बिहारी जैन (अध्यक्ष)
मो. 09837788540
भगवान पार्श्वनाथ की तप व केवल ज्ञान भूमि
श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ
अतिशय तीर्थ क्षेत्र
दिगम्बर जैन मन्दिर रामनगर किला,
तहसील आंवला, जिला बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत-243303
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सिद्दीपेट में मिली वर्धमान महावीर की मूर्ति

सिद्दीपेट के कल्लूर गांव में वर्धमान महावीर और उनके सहयोगियों मतंगा यक्ष की ऐतिहासिक महत्व रखने वाली मूर्तियां एक पहाड़ पर मिली है।

नव तेलंगाना चरित्र वृंदम की ओर से मिली जानकारी के बाद पुरातत्वविद् और प्लीच इंडिया फाउंडेशन के सीईओ डॉ. ई. एस. रेड्डी पहुंचे और जानकारी जुटायी।

डॉ. रेड्डी ने अनुमान लगाया कि मूर्तियां वेमुलवाड़ा चालुक्य शैली का प्रतिनिधित्व करने वाली १०वीं शताब्दी से संबंधित हैं, जिसे गिरनादिब्बा नामक एक पहाड़ पर स्थित मंदिर में रखा गया था। मूर्तियों के आस-पास झाड़ियाँ उग जाने से वह छिप गई थी। डॉ. रेड्डी ने कहा कि 'सिद्दीपेट में शताब्दियों पहले जैन धर्म का प्रचार करने के लिये ही संभवत: मूर्तियां को स्थापित किया गया होगा।' उन्होंने मंदिर को बहाल करने और जैन मूर्तियों को फिर से स्थापित करने के अलावा इन्हें भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि इस संबंध में क्षेत्र के रहने वाले ग्रामीणों से भी बात की गई है, यदि कोई जैन संगठन आगे आता है, तो ग्रामीणों ने आवश्यक सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

अजमेर में युग निर्माता आचार्य श्री रामेश के सानिध्य में धर्म ध्यान का अपूर्व ढाढ

अजमेर: युग निर्माता आचार्य श्री रामेश, उपाध्याय प्रवर बेले-बेले के तपस्वी बहुश्रुत वाचनाचार्य श्रद्धेय श्री राजेश मुनीजी म.सा. आदि ठाणा २१ एवं शासन दिपिका निरंजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा ६२ के अजमेर पधारने से धर्म-ध्यान, त्याग-तप का अपूर्व ढाढ लगा रहा। समता भवन के बाद मणिपुंज समता भवन में आगम सम्मत प्रवचनों की एवं विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम को आयोजन निरन्तर जारी रहा। २१ जनवरी २०२२ को आचार्य भगवन के मुखारविंद से वीर माता मुमुक्षु श्रीमती शशी कोलकत्ता की दिक्षा सम्पन्न हुई।

जैन-जैनेत्तर सभी त्यागी महापुरुषों इस सानिध्य का लाभ उठाया।

- महेश नाहटा

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
बिजय कुमार जैन जी आप आगे बढ़ें
हम सभी आपके साथ हैं...
दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
Rajesh Meghraj Kankaria Jain
भ्रमणध्वनि : 09225325067
Keshardeep Pressings
D-12, MIDC, Waluj, Aurangabad,
Maharashtra, Bharat-431136
दूरध्वनि : 0240-6452316, 2484344
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

धर्मपाल सम्मेलन सम्पन्न नारायण खेडी

उज्जैन: समता विभूति आचार्य श्री नानेश की अनुपम देन धर्मपाल प्रवृत्ति है 'व्यसन मुक्त, संस्कार युक्त, समता समाज के बढ़ते-चरण में धर्मपाल सम्मेलन राष्ट्रीय संयोजक समाजसेवी कमल सिपानी जैन बैंगलोर, श्रीमति काजल सांखला, मुंबई संयोजक बाबूलाल सेठिया जैन के नेतृत्व में साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतम रांका, महामंत्री निश्चल कांकरिया, मनोज डागा, रतनलाल रांका, सुनील बम्ब, प्रतीक सूरिया, चन्द्रशेखर जैन, राजेश काठेड़, मदन कटारिया, मणिलाल घोटा, युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष अतुल पगारिया, अजीत छेलावत, कमल पिरोदिया, महेश नाहटा, दिलीप काठेड़ आदि की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। धार्मिक पाठशाला-शिविर-समता शाखा को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

प्रेषक - महेश नाहटा

संत श्री गगन मुनि म.सा. ने किया मासखमन तप

ब्यावर: युग निर्माता महान तपोपुत आचार्य श्री रामेश के आज्ञानुवर्ती शासन दीपक श्री गगन मुनि जी म.सा. ने अपूर्व आत्म शक्ति का परिचय देते हुए उपवास पूर्ण किया है। श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ ब्यावर में तपस्या के अनुमोदना में १५०१ सामायिक उपवास, बैले-तैले आदि कई तप आराधना हुए। १२५ सामुहिक एकासना हुए तप की अनुमोदना में शुभ भावना व विचार रखे गए।

प्रेषक - महेश नाहटा

डागलिया पिता पुत्र को एक साथ अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

मुंबई: मुंबई के नाईस इंश्योरेंस लैंडमार्क के गणपत डागलिया व चिराग डागलिया ने लगातार हर महीने एक MDRT करके (यानी एक वर्ष में १२ MDRT करके) इंश्योरेंस व्यवसाय का सर्वोच्च पुरस्कार 'DOUBLE T.O.T (Top of the Table)' करके यह अनोखा खिताब अपने नाम किया है।

एक TOT = 6 MDRT, ऐसे दो T.O.T =12 MDRT व 4 COT करने वाले मुम्बई शाखा ९२१ के इतिहास में पहली बार हुआ है, यह एक रिकॉर्ड है, जो ब्रांच के चीफ़ मैनेजर अरविंद सालवी ने बताया। इसके अलावा भी इन दिनों पिता-पुत्र को कई मंचों से सम्मानित किया गया, जो गणपतजी डागलिया एवं चिराग जी डागलिया के लिए काफी सम्मानजनक बात है, इसके लिए उन्हें उनके करीबियों, जानने वालों व समाज के लोगों से बधाईयां मिल रही हैं।

भारतीय जीवन निगम के उच्च अधिकारियों ने डागलिया पिता-पुत्र के इस कीर्तिमान की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। मुम्बई ब्रांच ९२१ द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में एस. पी. शैल (मार्केटिंग मैनेजर, LIC MDO-1), अरविंद सालवी (चीफ मैनेजर, LIC ब्रांच ९२१), अमरेश कर्मरकर (अस्सिस्टेंट ब्रांच मैनेजर, LIC ब्रांच ९२१), रमेश बोहरा (SBA, LIC ब्रांच ९२१) एवं अन्य पधादिकारी की उपस्थिति में गणपत डागलिया एवं चिराग को 'डबल T.O.T 2022' के उपलक्ष दोनों को महाराष्ट्रियन विधि पूर्वक तुतारी बजाकर साफ़ा पहनाकर अवार्ड देकर सम्मानित किया गया।

एलआईसी का डबल-(टॉप ऑफ टेबल) T.O.T 2022 का रिकॉर्ड नाइस इंश्योरेंस लैंडमार्क के नाम, कई और सम्मानों से सम्मानित

इसके अलावा हाल ही में इस पिता पुत्र को पारस TV के शो में 'जैन रत्न' से सम्मानित किया गया। जानकारी हो कि नाइस इंश्योरेंस लैंडमार्क अपनी सेवाएं पिछले ३७ वर्ष से भली भांति दे रही है और इनके २५००० से अधिक ग्राहक देश-विदेश में इनसे पालिसी ले रहे हैं, जो कि गौरव की बात है। यही कारण है कि हर वर्ष नाईस इंश्योरेंस कंपनी अपने ही बनाये गए रिकॉर्ड को तोड़कर, नए रिकॉर्ड स्थापित करती है। गणपत डागलिया एवं चिराग डागलिया ने अपनी कड़ी मेहनत एवं शानदार सेवाओं की बदौलत इंश्योरेंस के क्षेत्र में जो मुकाम हासिल किया है, जो कि बहुत कम ही लोग कर पाते हैं। यही नहीं सामाजिक गतिविधियों में भी इनकी अच्छी खासी पैठ है, जिसके बदौलत इन्हें अक्सर मंचों पर सम्मानित किया जाता है।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'अहिंसा' और 'जैन एकता'
हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित

Jain Infoways

#11, GR Floor, P M Krishnappa Road,
1st Cross, S J P Road Cross,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 560002
Ph. : 080 - 41245251 / 42017342
e-mail : jainfowaysblr@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत को केवल
भारत ही बोलेंगे
~~इंडिया~~ नहीं
जय भारत!

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है

Ambar Kasliwal
Mob:9819096877

A Kasliwal & Company
Chartered Accountants
Specialising in SME IPOs, Startups and Virtual CFO Services

Office Address:
232, Udyog Bhawan Sonawala lane,
Goregoan East, Mumbai, Maharashtra,
Bharat - 400063, Tel: 022-49796877
Email: ambarkasliwal@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सम्मेद शिखर की सुरक्षा हम जैन धर्मावलम्बियों का कर्त्तव्य है -सारस्वताचार्य मुनी देवनंदीजी

चिकलठाणा (महाराष्ट्र): णमोकार जैन तीर्थ से सारस्वताचार्य मुनी देवनंदीजी एवम् धर्म तीर्थ से भारत गौरव आचार्य गुप्तिनंदीजी से झूम चैनल के माध्यम से समाजसेवी, पत्रकार, साहित्तिक एम. सी. जैन ने मुनीद्वय से विनंती की थी कि वर्तमान में सम्मेदशिखर जी की जो समस्या है, उस पर मार्ग दर्शन करें। राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य मुनी देवनंदीजी एवम भारत गौरव आचार्य मुनी गुप्तिनंदीजी ने कहा कि सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी जैनियों का तीर्थ क्षेत्र है, किंतु प्राचीन समय से आदिवासी समाज भी यात्रियों के सुविधा के लिये पहाड़ पर पहूंचाते थे, वृद्ध यात्रियों को, अपंग यात्रियों को ये आदिवासी डोली से सम्मेदशिखर जी पहाड़ की वन्दना कराते हैं, बीच में ही चाय-नाश्ते के स्टाल लगाते हैं, यात्री गण चाय पीते है, उपमा-पोहे आदी का आनंद लेते हैं, इसलिये सम्मेद शिखरजी पहाड़ पर हमने ही अवैध कार्य को बढ़ावा दिया है। वास्तव में यात्री सवेरे से लेकर पहाड़ की वन्दना करके आने तक चाय, नाश्ता नहीं करेंगे तो यह अवैध व्यवसाय बन्द करने पड़ेंगे। इसपर गम्भीर विचार की, आत्म मंथन की आवश्यकता है। सम्मेद शिखरजी मॅनेजमेंट को चाहिये कि एक कमेटी स्थापना कर, पहाड़ पर कौन आता-जाता है, इसकी कड़ी निगरानी रखें! इसको केन्द्र सरकार और राज्य शासन का सहयोग ले सकते हैं। क्षेत्र की सुरक्षा और यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेवारी मॅनेजमेन्ट की होनी चाहिए। ऐसा केवल सम्मेद शिखर जी ही नही, गिरनारजी, महावीर जी, सभी स्थान पर होना समय की मांग है।

-एम. सी. जैन
भ्रमणध्वनि: ९४२३१५०११६

दमोह रेलवे स्टेशन का नाम परिवर्तित कर कुंडलगिरी करने की मांग

दमोह मध्यप्रदेश का एक रेलवे स्टेशन है, जहां पर सभी ट्रेनों का ठहराव होता है, वहां से करीब ३५-४० किमी दूरी पर कूंडलगिरी सिद्धक्षेत्र है, जहां भारत का ही नहीं पूरे विश्व का एक विशाल मंदिर बनाया गया है, जिसमें भगवान श्री आदिनाथ ऋषभदेव का विशाल जिनबिंब विराजमान किया गया है तथा वहां पद अनेकानेक मंदिर निर्माण हो रहे है। संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य में सैकड़ों साधुओं का आवागमन निरंतर कुंडलगिरी क्षेत्र पर बना रहता है तथा सभी जैन मंदिरों एवं साधुओं के दर्शनार्थ यात्री भारी संख्या में यहां आते हैं, लेकिन वहां के स्टेशन का नाम 'दमोह' होने से बहुत से यात्रियों को कन्फ्यूजन पैदा होता है तथा भटकाव होता है।

अतः माननीय रेलमंत्री जी से निवेदन किया गया है कि दमोह रेलवे स्टेशन का नाम परिवर्तित कर 'कुंडलगिरी' कर दिया जाए तो उससे सभी यात्रियों को सुविधा होगी तथा कुंडलगिरी पहुंचने वाले यात्रियों के लिए परेशानी नहीं होगी।

जिनागम के प्रबुद्ध पाठक द्वारा सामाजिक मिलन कार्यक्रम

गया के नए ज़िला पदाधिकारी श्री त्यागरजन से शिष्टाचार मुलाक़ात कर विनय कुमार जैन ने अंगवस्त्र भेंट किया

गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी जैन से शिष्टाचार मुलाकात करते हुए रेवासा वाले बाबा (भबोदय अतिशय क्षेत्र रेवास सीकर राजस्थान) सुमति नाथ बागान के पूजन पुस्तक भेंट करते हुए विनय कुमार जैन

EWS सर्टिफिकेट अवश्य बनवायें !

१०% EWS आरक्षण के लाभ से अपने क्षेत्रवासियों को अवगत कराएं और EWS Certificate बनाने मे लोगों की मदद करे।

केंद्र और राज्य ने गरीब लोगो के लिये अलग से १०% EWS कैटेगरी में आरक्षण दिया हैं जिसे EWS (Economically Weaker Section) कैटेगरी कहा जाता हैं जिसके लिये सामान्य वर्ग के ज्यादातर लोग पात्र हैं और EWS के हकदार हैं।

ये आरक्षण हमारे समाज के आर्थिक और शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है। लेकिन अफसोस के EWS के १०% आरक्षण को लेकर जानकारी का बहुत ज्यादा अभाव है, इसलिये EWS को लेकर जागरूकता और प्रचार करना जरुरी है और ये हम सब की जिम्मेदारी है!

पात्रता: जो भाई/बहन सामान्य वर्ग से है और जिनकी सालाना उत्पन्न यानी वार्षिक आय ८ लाख रुपये से कम हैं वह इस आरक्षण के लिये पात्र है!!

शैक्षणिक क्षेत्र में फायदा:-

सभी शिक्षण संस्थओ मे सभी कोर्सेस के लिये १०% सीट्स EWS कॅटेगरी के लिये आरक्षित है और फीस मे भी सहूलियात मिलती हैं।

११वी, १२वी Diploma, graduation, Post graduation BA, BSC, B.COM, D.ed, B.Ed Medical, pharmacy, nursing enginering, polytechnic, LLB, ITI etc...

शासकीय नौकरियों में फायदा:-

गवर्नमेंट की हर नौकरी में १०% नौकरियां EWS कॅटेगरी के लिये आरक्षित है। क्लास ४ से लेकर क्लास १ गजेटेड (सिपाही से लेकर कलेक्टर) तक की सभी नौकरियों में EWS आरक्षण का लाभ मिल रहा है। मोदी सरकार ने २९ July २०२१ को घोषणा की कि अब Medical Education में ऑल इंडिया कोटे के तहत २०२१-२२ के एकेडेमिक सेशन से ही एमबीबीएस (MBBS) एमडीएस, एमएस, डिप्लोमा और एमडीएस कोर्सों में भी ऑल इंडिया कोटे के तहत आर्थिक रूप से कमजोर (EWS) वर्ग को १० फीसदी आरक्षण मिलेगा. १०% EWS आरक्षण का लाभ लेने के लिये आपके पास EWS सर्टिफिकेट होना जरुरी है!! महाराष्ट्र / मध्यप्रदेश / छत्तीसगढ़ / झारखण्ड / बिहार / उ. प्र. में EWS सर्टिफिकेट कैसे हासिल करें?

EWS सर्टिफिकेट तहसीलदार के ऑफिस से मिलता है, आपको अपने तहसील के सेतु सुविधा केन्द्र च्वाइस सेन्टर या ई-सेवा केंद्र से आवेदन करना पड़ेगा।

आवश्यक दस्तावेज:-

➪ पालक/अभिभावक का वार्षिक उत्पन्न/आय प्रमाणपत्र
➪ लाभार्थी का आधार कार्ड
➪ टी. सी. या निर्गम उतारा/जन्म प्रमाणपत्र

इस संबंध में समाज का कोई भी व्यक्ति आगे आ कर अपने बंधुओं की सहायता कर सकता है। यह एप्लिकेशन डाउनलोड कर लें, पूरा भरकर, तहसीलदार के पास डॉक्यूमेंट के साथ जमा करने पर EWS का सर्टिफिकेट मिलेगा।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
ना हम दिगम्बर-ना हम श्वेताम्बर
हम-सब जैन हैं

Vijaychand Vaid (Phalodi)
Mob. : 9345196701
Priya Exports
40/25, Kannu Swamy Road, R.S. Puram,
Coimbatore, Tamil Nadu, Bharat- 641 002
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को केवल
भारत ही बोलेंगे
इंडिया नहीं
जय भारत!
वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
Rajendra Mehta
Mob. 9677942877, 8072591001
SREE MAHAVEER PLYWOOD
Dealers in: Mica Sheets, Plywood & Adhesives Etc.
1062, M.T.P. Road, Opp. Chinthamani
Super Market, Coimbatore, Tamilnadu - 641 002
Ph : 0422 2554164, 4368164
email:sreemahaveerplycbe@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रसंत चंद्रानन ने किया दर्शन सागर ग्रंथ का लोकार्पण

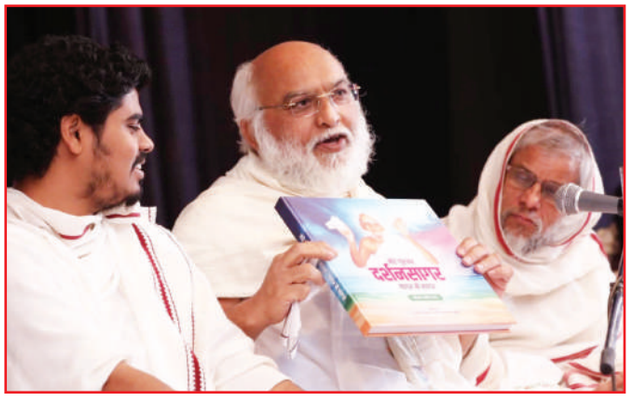

मुंबई: शिक्षा, सेवा, सशक्तिकरण, जीवदया तथा सामाजिक सरोकारों के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले विख्यात जैनाचार्य राष्ट्रसंत चंद्रानन सागर के हाथों गच्छाधिपति दर्शनसागर सूरीश्वर महाराज के जीवनवृत्त पर लिखित 'मेरे गुरुवर दर्शन सागर - गागर में सागर' ग्रंथ का विमोचन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

इस ग्रंथ की संकल्पना मनोज शोभावत की है तथा संगीता बागरेचा ने इसे लिखा है। दक्षिण मुंबई के पाटकर हॉल में आयोजित इस समारोह में देश भर से आए दर्शन भक्तों सहित मुंबई के विभिन्न जैन संघों व सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी तथा गणमान्य लोग विशेष रूप से उपस्थित थे।

राष्ट्रसंत आचार्य चंद्रानन सागर सूरीश्वर महाराज ने इस अवसर पर कहा कि साधु संतों का जीवन निस्वार्थ भावना के साथ केवल समाज के उत्थान के लिए समर्पित होता है तथा दर्शन सागर जी एक ऐसे संत थे, जो अपनी अंतिम सांस तक प्राणी मात्र के कल्याण के लिए समर्पित रहे।

उन्होंने कहा कि 'सागर समुदाय के गच्छाधिपति के रूप में गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि देश के विभिन्न राज्यों में लाखों किलोमीटर पैदल चलकर दर्शन सागरजी ने हजारों गांवों के लाखों लोगों को कल्याण की राह दिखाई।' उनका पूरा जीवन मानव सेवा को समर्पित रहा। इस ग्रंथ में प्रकाशित उनका जीवनवृत्त आनेवाली कई पीढ़ियों को संस्कारपोषित करेगा। उल्लेखनीय है कि दर्शन सागर महाराज के दिए गए संस्कारों से सम्पन्न चंद्रानन सागर जी भी पिछले ५० वर्षों से सामाजिक कल्याण के उसी मार्ग पर चल रहे हैं।

विमोचन समारोह में गोड़ीजी मन्दिर के ट्रस्टी निरंजनभाई चौकसी, समाजसेवी इन्द्रभाई राणावत, श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम के अध्यक्ष कांतिलाल शाह तथा उद्योगपति केवलचन्द चौहान व ग्रंथ की संकल्पना करनेवाले मनोज शोभावत, ग्रंथ की सम्पूर्ण लाभार्थी कुसुमबेन शोभावत तथा लेखिका संगीता बागरेचा भी मंच पर उपस्थित थीं। राष्ट्रसंत आचार्य चंद्रानन सागर ने ग्रंथ

का विमोचन किया। समाजसेवी कपूर बल्दोटा, सज्जन रांका, प्रकाश चौपड़ा एवं राजनीतिक विश्लेषक निरंजन परिहार इस ग्रंथ के विमोचन समारोह की आयोजन समिति के सलाहकार थे, एवं नाकोड़ा दरबार (मण्डल) लालबाग के संयोजन में आयोजन संपन्न हुआ। समारोह का संचालन ओमप्रकाश आचार्य एवं संगीतकार त्रिलोक भोजक थे। विमोचन कार्यक्रम के प्रायोजक आनंद दर्शन सिल्वर थे। यह जानकारी नाकोड़ा दरबार (मण्डल) लालबाग के नवरतन धोका एवं भंवर छाजेड़ ने दी।

जैन पत्रकार महासंघ से जुड़ने का आह्वान द्वारा

पर्मेन्द्र जैन, राजेन्द्र कुमार जैन, स्वदेश जैन, मनोज जैन, श्रीमती सुनयना जैन, डॉ. ममता जैन, रजत सेठी, श्रीमती स्वाति जैन

जयपुर: जैन पत्रकार महासंघ (पंजी.) के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया ने वरिष्ठ पत्रकार मनोज जैन सोनी निंबाहेड़ा को चित्तौड़गढ़ जिला संयोजक पद पर मनोनीत किया है। इसी प्रकार पत्रकार स्वाति जैन को हैदराबाद का जिला संयोजक, श्रीदेशना पत्रिका की संपादक, युवा विदुषी, कुशल मंच संचालक डॉ ममता जैन को पुणे का जिला संयोजक, वरिष्ठ पत्रकार धर्मेंद्र जैन को आगरा मंडल का संयोजक, ज्ञान देशना पत्रिका की संपादक श्रीमती सुनयना जैन को लखनऊ मंडल का संयोजक, राजेंद्र कुमार जैन को यमुनानगर हरियाणा का संयोजक, रजत सेठी को गिरिडीह, झारखंड जिले का संयोजक पद पर मनोनीत किया है। राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जयपुर ने अवगत कराया कि इससे पूर्व भी विभिन्न प्रांतों में संयोजक मनोनीत किए गए हैं।

जैन पत्रकार, संपादक व लेखक जैन संस्कृति ५ समाज व धर्म के लिए जैन पत्रकार महासंघ से जुड़कर अपने-अपने क्षेत्रों में सराहनीय कार्य कर रहे है। राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने समस्त जैन पत्रकार, संपादक व वरिष्ठ लेखकों से अनुरोध किया है कि महासंघ से जुड़कर जैन पत्रकारों का समाज में गौरव बढ़ाकर शक्तिशाली संगठन के लिए सहयोग प्रदान करें।

भारतीय जैन संगठन म.प्र. पूर्व द्वारा ऑनलाइन किया प्रथम वार्षिक कैलेंडर का विमोचन

छतरपुरः सामाजिक, शैक्षणिक एवं आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व प्रादेशिक स्तर पर कार्य कर रही संस्था 'भारतीय जैन संगठन' (बीजेएस) म.प्र. पूर्व द्वारा अपने प्रथम वार्षिक कैलेंडर का ऑनलाइन कार्यक्रम में विमोचन मुख्य अतिथि बीजेएस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र लुंकड पुणे तथा विशेष अतिथि राष्ट्रीय सचिव संप्रति सिंघवी व प्रदेश प्रभारी अमर गांधी पुणे द्वारा किया गया।

इस कैलेंडर विमोचन का संयोजन छतरपुर इकाई की ओर से महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय के प्रो. पी.के. जैन सदस्य बीजेएस प्रांतीय मार्गदर्शक समिति एवं बीजेएस के संभागीय अध्यक्ष पत्रकार राजेश रागी बकस्वाहा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बीजेएस प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. विमल जैन की अध्यक्षता एवं ज्ञानगंगा इंजीनियरिंग कॉलेज के चेयरमैन इंजी डी. सी. जैन, जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महासचिव उदयभान जैन, भारतवर्षीय जैन तीर्थक्षेत्र की उत्तरांचल कमेटी के मंत्री व युवा विद्वान, साहित्यकार डॉ. सुनील संचय एवं 'जैन मिलन' के क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेन्द्र जैन के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ फिल्म निर्देशक डॉ. मणीन्द्र जैन दिल्ली द्वारा दीप प्रज्जवलन तथा राष्ट्रीय कवि अजय अहिंसा के मंगलाचरण के साथ हुआ। वर्चुअल कार्यक्रम का संचालन राकेश जैन पालन्दी, बीजेएस जिला अध्यक्ष दमोह द्वारा किया गया। कैलेंडर का संपादन छतरपुर के पंकज कुमार जैन प्रांतीय सयुक्त सचिव बीजेएस, मनीष विद्यार्थी शाहगढ़, सम्भागीय सचिव सागर एवं इंजी. महेश जैन मकरोनिया द्वारा किया गया। प्रबंध संपादक पंकज कुमार जैन द्वारा बताया गया कि इस प्रकाशन में बीजेएस मध्यप्रदेश पूर्व की समस्त गतिविधियों तथा संस्था द्वारा समाज व राष्ट्रहित में किये जा रहे कार्यों को दर्शाया गया है।

आभार प्रदर्शन करते हुए प्रांतीय सचिव ए. के.पलन्दी ने इस कैलेंडर के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए ग्वालियर से एडवोकेट मनोज जैन, जतारा से पत्रकार अशोक जैन, टीकमगढ़ से श्रीमती मीना जैन, सतना से इंजी रमेश जैन, मकरोनिया से इंजी. प्रकाश मोदी सहित सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया गया।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
बिजय कुमार जैन जी आप आगे बढ़ें
हम सभी आपके साथ हैं...
दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

Sohanlal Chopra Jain
Mob. 09631740589
Post. Naharia Bazar,
Dist. Madhubani, Bihar, Bharat- 847108
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

फूल खिलते हैं खुश्बू देने के लिए
मनुष्य जन्म मिला है कुछ कर गुजरने के लिए

१. अभिवादन में जय जिनेन्द्र-जय भारत बोलिये। (हाय हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र-जय भारत बोलिये)

२. घर व दुकान के प्रवेश द्वार में जय जिनेन्द्र-जय भारत लिखवायें अथवा जैन के साथ भारत माँ का प्रतीक लगावें।

३. प्रतिदिन घर-घर ४५ मिनट सामूहिक प्रार्थना/स्वाध्याय करें, उसमें परिवार के सभी सदस्य सम्मिलित हो ताकि परिवार/समाज में सुन्दर वातावरण निर्मित हो सकें। ४५ मिनट ज्ञान ध्यान सीखें।

४. संभवत: प्रतिदिन सामायिक करें अथवा कम से कम एक नवकार मंत्र की माला अवश्य करें, लेकिन छुट्टी या रविवार को एक सामायिक अवश्य करें।

५. प्रत्येक रविवार को सुबह या शाम एक घंटा नवकार मंत्र का जाप के साथ स्वाध्याय हो, ऐसा क्रम दूसरे रविवार को दूसरे घर में, तीसरे रविवार को तीसरे घर में इस तरह क्रम चलता रहे। जैन भवन (धार्मिक स्थान) में भी किया जा सकता है।

६. बाल, युवा पीढ़ी में सुसंस्कार निर्माण हेतु प्रतिदिन या साप्ताहिक धार्मिक पाठशाला (जैन संस्कार शाला) दोपहर २ से ३ बजे तक एक घंटा अनिवार्य रुप से संचालित हो। बच्चों को प्रोत्साहन स्वरुप पुरस्कृत करावें।

७. शीत व ग्रीष्माकालीन अवकाश में कम से कम ८-१० दिन का जैन धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन स्थानीय या आंचलिक स्तर पर हो। उसमें स्थानीय प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं व स्वाध्यायियों की सेवा ले सकते हैं। अन्य जानकारी या सहयोग के लिए नगरी कार्यालय में सम्पर्क करें।

८. पर्वराज पर्युषण के पावन अवसर पर धर्माराधना हेतु अवश्य ही स्वाध्यायी आमंत्रित करें, स्वयं स्वाध्यावी बन कर सेवा करें।

९. 'पानी बिना जग सूना, नियम त्याग बिना जीवन सूना' को दृष्टिगत रखते हुए २५ सूत्रीय दैनिक नियमावली व १४ नियम का पालन यथासंभव स्वयं करें एवं दूसरों को भी प्रेरणा दें।

१०. अचित (धोवन) पानी पीने का लक्ष्य रखें। यदि संभव न हो तो कम से कम धोवन पानी प्रतिदिन घर में अवश्य रखें ताकि सुपात्रदान का महान लाभ प्राप्त हो सके।

११. प्रतिदिन कम से कम १ रुपया का दान परमार्थ में अवश्य करें। अन्य को भी प्रेरणा दें।

१२. हिंसाजनित सौंदर्य प्रसाधन (लिपिस्टिक, शेम्पू, सेंट) आदि के प्रयोग से बचें।

१३. संत/सतियां जी. म.सा. को दर्शनार्थ जावें, सामायिक प्रतिक्रमण करते समय सेल की घड़ी, उपकरण पहनने/रखने का त्याग करें।

१४. प्लास्टिक/पॉलिथिन का उपयोग नहीं करे ताकि अनर्थदण्ड पाप से बचा जा सके।

१५. जैन धर्म का गौरव अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु जैनियों की पांच व्यावहारिक पहचान का अवश्य पालन करें।

(अ) नवकार मंत्र पर श्रद्धा (ब) रात्रि भोजन का त्याग

(स) सप्तकुव्यसन (दुर्व्यसनों) का सम्पूर्ण त्याग

(द) पानी छानकर पीना (य) जय जिनेन्द्र-जय भारत का अभिवादन।

१६. पटाखें नहीं छोड़ना, सड़कों पर नहीं नाचना, होली नहीं खेलना, ताश नहीं खेलना।

१७. जिन होटलों में मांसाहार भोजन बनता हो या दोनों प्रकार का भोजन बनता हो वहां पर स्वयं न जाना ओर न वहां पर कोई कार्यक्रम रखना।

१८. पांचोंतिथियों (२/५/८/११/१४) को हरी वनस्पति (लीलोती) का त्याग, ब्रह्मचर्य (शीलव्रत का पालन करें।)

१९. धार्मिक पुस्तकालयों व वाचनालयों का संचालन करें।

२०. जमीकंद का त्याग करें या मर्यादा तो अवश्य करें तथा सामूहिक भोज में सम्पूर्ण जमीकंद का निषेध होना ही चाहिए ताकि अनावश्यक पाप से बच सकें।

२१. जन्म दिन (बर्थ डे) पर मोमबत्ती न बुझाएं, यह हमारी संस्कृति नहीं है। उस अवसर पर नवकार मंत्र का जाप, गरीबों को फल आदि वितरण, गुरुदेव आदि के दर्शनार्थ जाना व मित्रजनों को अच्छी पुस्तकें /सत्साहित्य भेंट करना।

२२. घर में पुराने (नये) कपड़े, दवाई, पुस्तकें आदि जरूरतमंद भाई-बहनों को देवें।

२३. मांस निर्यात बंद कराने, कल्लखानों पर रोक लगाने के लिए कम से कम एक गाय का पालन जरूर करें-करवायें।

२४. शाकाहार व व्यसन मुक्ति से प्रचार-प्रसार की दिशा में यथासंभव अवश्य अपना अमूल्य योगदान दें। इसमें साहित्य वितरण, स्कूलों-कॉलेजों में संगोष्ठी का आयोजन, पोस्टर/कोटेशन लिखावें आदि। संत-सतियों जी म.सा. का प्रवचन स्कूलों-कॉलेजों, जेलों में पिछड़ी बस्तियों में अवश्य करावें।

२५. सत्साहित्य का अध्ययन प्रति दिन १५ मिनट अवश्य करें।

२६. 'दीन-दुखियों की सेवा, ईश्वर सेवा' .... उक्ति हृदयंगम करते हुए नेत्र शिविर, स्वास्थ्य शिविर, विकलांग: जयपुर पैर शिविर आदि अन्य सेवा कार्यों का अपने स्तर पर यथासंभव आयोजन करें। पानी के प्याऊ खोलें।

२७. संघ में एकता, प्रेम, संगठन बनाये रखने में सहयोगी बनें, विघटन-तनाव खींचातानी आदि के निमित्त न बनें, इससे महामोहनीय कर्म का बंध होता है।

२८. अपने आपको सुधारने व सरल बनाने से परिवार, समाज, राष्ट्र अवश्य सुधरेगा।

२९. स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग यथासंभव व अधिकाधिक करें।

३०. महत्वपूर्ण उत्सवों व पर्वो पर मांस, मछली, मटन बिक्री पर सरकारी प्रतिबंध है। उसका पालन करावें। यह कार्य अपने आसपास गांवों, नगरों में एवं रिश्तेदारों, स्नेहजनों व परिचितों को जैन-जैनेत्तरों को भी सूचित कर यथासंभव क्रियान्वयन करें।

३१. संकल्प करें कि मां-बाप का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे।

३२. आत्म शुद्धि व कर्म निर्जरा हेतु माह में एकासना या एक आयंबिल अवश्य करने का लक्ष्य रखें।

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

- महेश नाहटा
नगरी (छत्तीसगढ़) पिन ४७३७७८
फोन: ०७७००-२५४२४४, मो.: ९४०६२-०४३५४

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैनाचार्य श्री हस्तीमल जी के ११२वें जन्म दिवस पर आराधना भवन के निर्माण की घोषणा

जैन आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के ११२वें जन्मदिवस एवं मरुधर केसरी मिश्रीमल महाराज साहब के ३६वें पुण्य स्मृति दिवस तप त्याग के साथ मनाया गया। भेरुलाल जीरावला कंपाउंड में श्री जैन रत्न युवक परिषद एवं श्री जैन रत्न श्राविका मंडल के संयुक्त तत्वाधान में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में गुरुहस्ती कल्याण संस्थान के मंत्री ओमप्रकाश बांठिया ने आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के जीवन संस्मरण का उल्लेख करते हुए गर्भावस्था में मातुश्री रुपा देवी जी द्वारा दिए गए संस्कार एवं १० वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण कर, २० वर्ष की उम्र में आचार्य पद पर सुशोभित होकर, जिन शासन का गौरव बढ़ाते हुए पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने अपने समय में सभी संप्रदायों के साथ उनके मधुर संबंध में विशेषकर आचार्य श्री जवाहर लाल जी महाराज साहब, आचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज साहब, बहुश्रुत पंडित समर्थमल जी महाराज साहब, श्रमण संघ के आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज साहब के प्रेरणा प्रसंगों का भी उल्लेख करते हुए बांठिया जी ने कहा कि खरतरगछ की परम विदुषी साध्वी श्री विचक्षण श्री जी एवं अन्य संप्रदायों के साधु आचार्यों के साथ उन्होंने जैन धर्म की एकता एवं तीर्थंकर महावीर के संदेशों को प्रसारित करते हुए सामायिक स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा, इतिहास, साहित्य की अनमोल रचना सहित ७१ वर्ष के दीक्षा प्रयाय, ६१ वर्ष आचार्य पद पर को सुशोभित करते हुए जिन शासन की अपूर्व प्रभावना की। मरुधर केसरी मिश्रीमल जी महाराज ने सामाजिक चेतना, धार्मिक संस्कारों को गति प्रदान की। कार्यक्रम में आशुकवि कमलेश चोपड़ा ने प्रेरक गीतिका, श्राविका मंडल अध्यक्ष मनीषा देवी भंसाली, शोभा देवी चोपड़ा, टीना जैन, मुकनचंद भंसाली ने गुणगान रचनाएं प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में विशेष रूप से दानदाता भेरूलाल, महेंद्र कुमार, भरत कुमार धीरज कुमार जीरावला परिवार द्वारा श्रीमती सोहनी देवी की पुण्य स्मृति में भूमि खरीद कर उस पर भव्य स्वाध्याय भवन के निर्माण के संदर्भ में परिवार का विशेष सम्मान किया गया। विशेषकर भेरूलाल जीरावला एवं सुपुत्र धीरज कुमार ने उक्त भूमि पर साधना आराधना के लिए विशेष भवन निर्माण करने की भावना व्यक्त की।

संघ द्वारा साफा, शाल, श्रीफल से सम्मान के साथ ही महिला वर्ग में संगीता देवी, मनीषा देवी टीना का सम्मान किया गया। विशेष अतिथि पाली निवासी दिलीप कुमार, विश्वास, रामा कंवरी, टीना कुमारी सहित परिवार का भी विशेष सम्मान किया गया। संघ द्वारा भेरूलाल जीरावला परिवार द्वारा किए जा रहे साधना भवन के महत्वपूर्ण कार्य के लिए मंगल भावना व्यक्त की गई। समारोह में वरिष्ठ श्रावक खीमराज भंडारी, रूपचंद-बाघमार, मिठालाल मधुर, माणकलाल चोपड़ा, ललित सालेचा, हनुमान जागीरदार, धनराज चोपड़ा, मोतीलाल मोदी, धनराज भंडारी, महावीर सालेचा, पवन जागीरदार, सुरेंद्र बाफना, बाबूलाल श्रीश्रीमाल, गणपत, महावीर, ललित, सहित बड़ी संख्या श्रावक एवम् श्राविकाओं के साथ, युवा वर्ग ने भी भाग लिया। कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी, गीत एवं निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। श्रीमान भेरुलाल महेंद्र कुमार जीरावला परिवार द्वारा सभी के लिए उपहार की योजना रखी गई। रूपचंद बाघमार ने मंगल पाठ श्रवण कराया। कार्यक्रम में स्वर्गीय श्रीमती सोहनी देवी धर्म सहायिका भेरूलाल जीरावला की प्रथम पुण्यतिथि पर दो लोग लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
ना हम दिगम्बर-ना हम श्वेताम्बर
हम-सब जैन हैं
AMIT TONGIA JAIN
Mob. : 9967048849
Helios
Your Sourcing Partner Around The World
HELIOS INFRA VENTURES
B-1012, Kanakia Wall Street, Andheri Kurla Road,
Andheri- East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 093
Ph. : +91 22 - 62396039/40
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.maibharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मानवता की सेवा ही परम लक्ष्य

-पी. आर. कांकरिया, चेयरमेन राजस्थान हॉस्पिटल

अहमदाबाद: भारत जैन महामंडल बालोतरा अध्यक्ष ओम प्रकाश बांठिया ने राजस्थान हॉस्पिटल अहमदाबाद के चेयरमैन पी. आर. कांकरिया एवम् नवनिर्वाचित ट्रस्टी गणों का सम्मान किया गया।

राजस्थान हॉस्पिटल परिसर में चेयरमैन पी.आर. कांकरिया के नेतृत्व में संपन्न चुनावों में एकता पेनल के १२ प्रत्याशी शानदार समर्थन से विजयी हुए, उन सभी का भारत जैन महामंडल परिवार की ओर से बांठिया ने स्वागत करते हुए हर्ष व्यक्त किया कि पूरी टीम द्वारा जो कोरोना के समय सेवाएं एवं वर्तमान में भी शानदार सेवाएं जारी है उल्लेखनीय है। राजस्थान हॉस्पिटल चेयरमैन पी.आर. कांकरिया ने कहा कि मानवता की सेवा उनका प्रमुख लक्ष्य है और राजस्थान हॉस्पिटल के माध्यम से पूरे कार्यकाल में कोरोना के समय और अन्य समय भी ट्रस्टी गणों और पूरे हॉस्पिटल टीम ने उत्कर्ष सेवाएं देने का अपना लक्ष्य निर्धारित कर कार्य किया गया और यह उसी का प्रतीक है, जिसके कारण एकता पैनल के सभी १२ प्रत्याशी भारी मतों से निर्वाचित हुए हैं, इस अवसर पर नवनिर्वाचित बालोतरा के राजेंद्र कुमार जीरावला, भवरलाल जैन, महेंद्र भंसाली, नरेंद्र मेहता सहित ट्रस्टी का सम्मान किया गया। राजस्थान जैन स्थानक वासी संघ के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

पहले मातृभाषा हिंदी फिर राष्ट्रभाषा
Only भारत बोलिए
SHAH PUBLICITY® SURAT
0261 - 2478910 / 98980 45678

जैन एकता

हम ऋषभदेव के वंशज,एकता का ध्वज लहराना है,
धर्म की रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

ये धर्म भी है, कौम भी है, ये तो जीवन शैली है,
इसकी महिमा इसीलिए तो पूरी दुनिया में फैली है,
हर जैनी का लक्ष्य एक आत्मा की शरण में जाना है,
धर्म की रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है
आठवां आश्चर्य विश्व का जैन संत कहलाता है,

देख चर्या और तपस्या हर कोई दंग रह जाता है,
एक ही चाहत हैं इनकी जनम मरण से मुक्ति पाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

किसी भी धर्म का अनुयायी जैन संत बन सकता है,
संत रूप में हर जैनी उनको वंदन करता है,
मिशाल ऐसी जगत में मुश्किल ही मिल पाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

क्षत्रीय कुल के ये तीर्थंकर जगत के है तारणहारे ,
आत्म कल्याण की राह दिखाने धरा पर आए थे सारे,
लक्ष्य घोर तपस्या करके भव सागर तर जाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

स्तुति नहीं किसी की णमोकार जगत में न्यारा है,
इसमे अरिहंतो सिद्धों संतों को नमन हमारा है,
विश्व शांति के लिए हमें इसे जपना और जपाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

हम अनेकान्त विश्वासी वसुधैव कुटुम्बकम के अभिलाषी,
सादा जीवन उच्च विचार को जीता है हर सन्यासी,
जिनशासन के शासन में कभी होता नहीं मनमाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

जैन जीवन शैली तो पूरी ही कर्म प्रधान है,
कर्मो के अनुसार सजा का निश्चित ही प्रावधान है,
लेखा जोखा कर्मों का हमें यहां चुकाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

हम महावीर के अनुयायी जिन शासन ध्वजवाहक हैं,
सुख दु:ख में हर किसी के बनते सदा सहायक है,
संतों से मिला हमें जीवन का अनमोल खजाना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

हर जैनी जीवन में अहिंसा को दिल से अपनाता है,
किसी का दिल दुखाना भी तो भाव हिंसा कहलाता है,
अमन चैन से रहकर हमें अपना जीवन बिताना है,
धर्म रक्षा की खातिर हमें अपना फर्ज निभाना है

- कवि युगराज जैन

जय जिनेन्द्र! जिनागम

भारत को भारत ही बोलें इंडिया नहीं — **Remove INDIA Name From The Constitution**

केतन मेहता जैन
चेयरमैन जीतो वडोदरा शाखा
वडोदरा गुजरात निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४०७१३७३

केतन जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि समाज में 'जैन एकता' होना, यह एक कठिन विषय है क्योंकि जब तक हमारे साधु-संत एक साथ नहीं आएंगे, तब तक हमारा समाज एक नहीं हो पाएगा। सर्वप्रथम हमारे गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आकर इस दिशा में प्रयास करना चाहिए। वे एक होंगे तो संपूर्ण श्रावक समाज भी एक हो जाएगा। साथ ही हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि हम अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य जोड़ें। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी जितनी भी धार्मिक प्रक्रिया व पद्धतियां भिन्न-भिन्न हों पर सब के मूल में भगवान महावीर और उनके सिद्धांत हैं, अतः हमारे जितने भी पर्व हैं, पर्यूषण, संवत्सरी या महावीर जन्म कल्याणक या कोई और पर्व सभी एक साथ एक ही समय पर मनाया जाना चाहिए, भले ही पूजा-पद्धति अलग-अलग हों। तीसरी महत्वपूर्ण बात समाज में 'व्यक्ति पूजा' बंद कर जैनत्व के महत्व प्रदान करना चाहिए क्योंकि जैनत्व ही सर्वश्रेष्ठ है और हमें उसका ही पालन करना चाहिए। समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, एकता होने से ही हमारा व्यवसायिक, राजनीतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय महत्व बढ़ेगा। अतः समाज में एकता अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

आज की युवा पीढ़ी समाज में फैले आडंबर को नहीं मानती, वह जैनत्व की बातों को समझना चाहती हैं, पर उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है। उन्हें जैन धर्म के पांच प्रमुख सिद्धांत सत्य,अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रम्हचर्य का पाठ निष्ठा पूर्वक समझाया जाए तो वह अवश्य अपने धर्म और समाज से जुड़ी रहेगी। वह धर्म से ऊपर देश को मानती हैं वे सर्वप्रथम भारतीय हैं फिर जैन हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, ना कि इंडिया, जो अंग्रेजों द्वारा दिया गया नाम है, जो पाश्चात्य संस्कृति व अधिपत्य का प्रतीक है। हमारी संस्कृति 'भारत' से है और यही हमारा मूल है। अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना होना चाहिए।

केतन जी वडोदरा के निवासी हैं। आप व्यवसाय में कार्यरत है, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी विशेष सक्रिय रहते हैं। भारतीय जैन संघटना के राज्य अध्यक्ष रहे हैं। अलकापुर स्थानकवासी जैन समाज के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। साथ ही आप 'जीतों' के वडोदरा शाखा के चेयरमैन के रूप में सेवारत हैं। अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

राजेश जैन
महामंत्री दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
भ्रमणध्वनि: ९४१५२४७५७६

राजेश जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में एकता की अत्यंत आवश्यकता है। समाज में फैले पंथवाद के कारण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से हम कमजोर होते जा रहे हैं। विशेषकर राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से हमारा कोई अस्तित्व नहीं रह गया है। इसके लिए सर्वप्रथम सभी को अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लिखना चाहिए। गोत्र भी लिखें पर जाति में जैन अवश्य लिखा जाए, जिससे सरकारी रूप से हमारी वास्तविक संख्या का पता चल सके। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि सामाजिक रूप से भी हमें पंथवाद को भूल कर एक-साथ एक मंच पर आना होगा और इसके लिए गुरु-भगवंतों को विशेष रूप से प्रयास करना होगा। वे चाहे तो अवश्य ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। अतः समाज में 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म व धार्मिकता से जुड़ा हुआ तो है पर सामाजिक संस्था में सक्रिय नहीं हो पा रहा है। समय अभाव और अपनी जीवन शैली के कारण, सामाजिक व धार्मिक कार्यों में सक्रिय नहीं हो पाता है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि यह तो होना ही चाहिए कि अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' रहे और इसके लिए 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के संस्थापक अध्यक्ष बिजय कुमार जैन जी का प्रयास सराहनीय है।

राजेश जी मूलतः प्रयागराज के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई। प्रयागराज में आप दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर के महामंत्री पद पर सेवारत है और इस संस्था से जुड़ी सभी अन्य संस्थाओं में भी सक्रिय रहते हैं।

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

समाजसेवा ही मेरे जीवन का उद्देश्य

जमनालाल नाथुलाल जी जैन हपावत का जन्म २२ दिसंबर १९५५ को व ९वीं तक की शिक्षा परसाद ज़िला उदयपुर में सम्पन्न हुआ। १३ साल की उम्र में १९६९ में मुंबई आए। वहाँ पिता व भाई के साथ व्यापार में लगे। शुरु में मेटल के व्यापार से जुड़े फिर १९७८ में मुंबई नगरपालिका में ठेकेदारी का काम शुरू किया। बिजनेस करने के चाह से बाद में कविराज कंस्ट्रक्शन कंपनी की शुरुआत की। उसमें रोड का सिवील काम प्रारंभ किया, उसके बाद मुंबई महानगरी म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के पानी के पाइपलाइन व गार्बेज ट्रांसपोर्टेशन एवं ऑटोमेटिक रोड स्वीपिंग मशीन का कारोबार किया इसकी शाखायें आज मीरा-भाइंदर, सूरत, अहमदाबाद, जूनागढ़, उज्जैन, पुणे, रायगढ़ एवं अन्य छोटे शहरों में भी है।

जमनालाल हपावत
संस्थापक व अध्यक्ष,
श्री दिगंबर जैन ग्लोबल महासभा

धार्मिक व सामाजिक कार्यो

- मुंबई गुलाल वाडी मंदिर के २० साल से ट्रस्टी है।
- श्री दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी के साथ महामंत्री (तीर्थ) धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष पद पर २५ साल तक काम किया।
- भगवान श्री बाहुबली श्रवण बेलगोला के महा मस्तकाभिषेक २०१८ में कलश आंबटन समिति के राष्ट्रीय संयोजक पद पर रहकर देश विदेश मे कलश आंबटन का काम किया।
- दशा नागदा समाज मुंबई के अध्यक्ष पद पर २०२० से पद पर
- २०२१ में श्री दिगम्बर जैन ग्लोबल महासभा का गठन कर संस्थापक व अध्यक्ष
- देश में कोरोना काल में दिगंबर जैन समाज के आर्थिक रुप से कमजोर ५००० से अधिक परिवारों को जो देश के अलग-अलग प्रांत में रहते है उन्हें भोजन (राशन) सामग्री पहुँचाने का काम किया।
- वयस्क जो डॉक्टर के पास नहीं जा पाते उनके लिए आन लाईन डॉक्टर सुविधा उपलब्ध कराई।
- आर्थिक रुप से कमजोर भाईयों, बच्चों के शिक्षा सहायता लिए निर्मल ज्ञान योजना की शुरूवात की।
- कोरोना काल से अनेक युवाओं की चली गई उन्हें नौकरी दिलाने हेतु जैन जॉब चालू किया।
- धर्म में आस्था के कारण एवं परम मुनि भक्त के कारण मुनियों को विहार के लिए आसानी हो इसलिए होने विहार की हर लोकेशन पता चले इसलिए पूरे देश के विहार लोकेशन दिखाने वाली **विहार ऐप** बनाई।

एवं इनके जैसी कई कल्याणकारी योजनाओं को चला कर समाज को जोड़ने का काम किया।

- आर्थिक रुप से कमजोर महिलाओं के लिए रोज़गार दिलाने व उनके परिवार में बच्चों की शिक्षा व स्वास्थ्य में मदद करने के लिए **ग्लोबल जैन बाजार** नाम से ई-कॉमर्स वेबसाइट बना कर उसका उद्घाटन २६ जनवरी २०२२ को पारस चैनल और जैनम जूम चैनल पर किया जिससे समाज की हर महिला सशक्त एवं आत्मनिर्भर बने यह कोशिश जारी है।
- ग्लोबल महासभा सदस्यता अभियान भी शुरू किया। यह भी २६ जनवरी २०२२ से शुरू है। जिससे पूरे भारतवर्ष में ग्लोबल महासभा सामाजिक एवं धार्मिक कार्य के साथ जैन समाज के सभी वर्ग का संपूर्ण विकास पर काम चलेगा
- समाज जिन्हें चलते-फिरते तीर्थंकर कहता है ऐसे हमारे सर्व मुनिराज, साधु-साध्वी के स्वास्थ्य के लिए यह प्रोजेक्ट भी जल्द ही शुरू होगी, जिसमें पूरे देश के आयुर्वेदिक दवाखाने डॉक्टर एवं मेडिकल की संपूर्ण जानकारी साधुओं को देश के किसी भी कोने में हो मिल जाएगी एवं उन्हें स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होगा।

इसके साथ ही अन्य कई प्रकल्प

जमुनालाल जी **जैन एकता** के विषय पर अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि समाज में एकता बहुत ही जरूरी है और यह तभी संभव होगा, जब हम पंथवाद और अहंकार को छोड़कर आपसी सामंजस्य के साथ आगे बढ़ेंगे क्योंकि समाज में पंथवाद और आपसी झगड़ों के कारण हम अपने धर्म के वास्तविक महत्व को खोते जा रहे हैं। जैन समाज को सबसे संपन्न व्यवसाई व समाज के रूप में जाना जाता है, पर ऐसी बात नहीं है, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश जैसे कई क्षेत्र हैं जहां जैन समाज के कई बंधु ऐसे हैं जो नौकरी पेशा व छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा कर रहे हैं। ऐसे ही वर्ग के लोग दूसरे धर्म के प्रति आकर्षित होकर अपना धर्म परिवर्तित कर लेते हैं और इसका कारण है कि दूसरे धर्म और समाज उन्हें रोजी-रोटी उपलब्ध करवाता है। पेट भरेगा, तभी लोग धर्म के बारे में सोचेंगे, इस पर प्रतिबंध लगाने के लिए जैन समाज के सभी बंधुओं को सोचने की आवश्यकता है और यह तभी हो सकता है, जब हम जैन एकता स्थापित कर एक साथ चलेंगे। अतः समाज में एकता होना बहुत जरूरी है। अन्यथा एक समय ऐसा आएगा कि हम सिर्फ नाम मात्र के रह जाएंगे।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से कम ही जुड़ी है और यह एक विकट समस्या है। युवाओं को अपने धर्म और समाज से जोड़ने के लिए साधु-संतों के साथ-साथ परिवार व समाज को भी इस विषय पर सोचना होगा, क्योंकि युवा वर्ग अपने कैरियर के चक्कर में पड़ कर अपने धर्म से विमुख होता जा रहा है, कहीं-कहीं तो अन्य जाति व धर्म में विवाह के कारण भी हमारा समाज टूटता नजर आ रहा है। इन सब पर गहन विचार करना होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आप का कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' होना चाहिए ना कि इंडिया। हमारे तीर्थंकर आदिनाथ के जेष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा। यह हमारी संस्कृति की पहचान है, अतः हमारे देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही होना चाहिए।

जिनागम के संपादक बिजय कुमार जैन का कार्य व सोच प्रशंसनीय है

-डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन
प्रोफेसर, शिक्षाविद्
डोंगरगढ़ निवासी-मेरठ प्रवासी,
भ्रमणध्वनि: ९४५६२६५६२१

डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त प्राध्यापक हैं। आप राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भूगोल विषय में अपना विशेष स्थान रखते हैं। आपने वर्ष १९८० से लेकर १९९२ तक चार बार भूगोल की अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेकर राज्य व देश को गौरवान्वित किया है। विश्व स्तरीय सम्मेलनों में आपने अपने शोधपत्र, पर्यावरण, राष्ट्रीय वन उद्यान, वन्य जीव-जन्तु संरक्षण, पर्यटन पर लेख प्रस्तुत कर अनेक कीर्तिमान स्थापित कर अनेक उपलब्धियाँ हासिल की है। १०० से अधिक लेख, पुस्तकों के रचियता डॉ. जैन को मेरठ की 'जैन-मिलन संस्था' के द्वारा 'जैन गौरव स्मृति सम्मान' से अलंकृत व पुरस्कृत किया है, इसके पूर्व आपके द्वारा 'चन्द्रगिरि जैन तीर्थ डोंगरगढ़' लेख जैन फोकस में प्रकाशित की प्रति आपके द्वारा आचार्य विद्यासागर जी के करकमलों में प्रस्तुत की गई है, जिसकी प्रशंसा आचार्य श्री सहित अनेक जैन मुनिवर संतों ने की है। ७८ वर्षीय डॉ. जैन आज भी उम्र के इस पड़ाव में लेखन कार्य कर ऐसे धार्मिक क्षेत्रों का पता लगाने की कोशिश में लगे रहते हैं जहाँ जनसाधारण का कभी ध्यान ही नहीं जाता। डॉ. जैन देश के गणमान्य राज्यपाल, मुख्यमंत्रियों से अनेक बार सम्मानित व पुरस्कृत हो चुके हैं। समाजसेवा के क्षेत्र में आपने बीड़ा उठाया है। कोविड-१९ में जिनके परिवार बिखर गए थे, जिनकी रोजी-रोटी छिन गई, जिनका कोई सहारा नहीं रहा और जो दाने-दाने को मोहताज हो गए, ऐसे जरूरतमंदों के लिए आपने धनराशि इकट्ठा कर क्षतिग्रस्त परिवारों को आर्थिक मदद दी है। घर में पड़ी बेफिजूल वस्तुओं टाइपराइटर, लैपटॉप, पम्प, पुरानी सायकल कैमरे इत्यादि वस्तुओं को बेचकर प्राप्त धनराशि को जरूरतमंदों को देकर एक मिशाल कायम किया है।

'जैन एकता' के सम्बन्ध में आपकी अभिव्यक्ति इस तरह से है।

समाज में एकता ना होने से इसका पूरा-पूरा लाभ दूसरे समाज के लोगों को मिलता है। दूसरे समुदायों की तुलना में हमारी संख्या वैसे ही बहुत कम है। उसमें भी हम बंटे हुए हैं, तो हमारा अस्तित्व कैसे कायम होगा। संसद में आज देखें तो कितने सांसद जैन हैं या अपने नाम के आगे जैन लिखते हैं या जैन समुदाय के किसी एक मुद्दे को कोई उठाने वाला है। आगे आपका कहना है कि आज जैन समाज इतने पंथों में बंट चुका है कि सभी पंथ व सम्प्रदाय अपने-अपने सुर अलापने में लगे हुए हैं। समाज में बिखराव, पंथ एवं सम्प्रदायों में बंटे लोग और नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट से समाज की एकता अब मुश्किल लगती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि भारतवर्ष कहने में स्वाभिमान झलकता है। इण्डिया शब्द का उच्चारण करना परतंत्र का बोध करना जैसा प्रतीक लगता है। 'भारत को केवल 'भारत' बोला जाए' एक बेहतरीन मुहिम है। पिछले कुछ माह पूर्व 'जिनागम' के सम्पादक श्री बिजय कुमार जी जैन के अथक प्रयासों से दिल्ली स्थित जन्तर-मन्तर में जो आह्वान किया गया था, नि:संदेह ही प्रशंसनीय व काबिले तारीफ कदम था।

विशाल जैन
व्यवसाई व समाजसेवी
रामपुर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९७१९१७३१०८

विशाल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज को मजबूत बनाने के लिए समाज में एकता बहुत जरूरी है और इसके लिए सर्वप्रथम चाहे किसी भी पंथ और संप्रदाय के हो सभी को एक साथ एक मंच पर लाना होगा। इसके लिए हमारे जो भी कार्यक्रम होते हैं, चाहे किसी भी समाज के हो उसमें सभी समाज बंधुओं को जोड़ना चाहिए। जिससे वे एक दूसरे के परस्पर संपर्क में आए और एक दूसरे के कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर सहभागी हो, इससे आपसी विचार जुड़ेंगे। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे जो भी साधु संत हैं, वे नए मंदिर निर्माण कार्य की जगह पर पुराने मंदिर का ही जीर्णोद्धार कर गति प्रदान करें और जो परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हैं उन्हें सहयोग प्रदान कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इससे समाज में एकता स्थापित होगी। आज का युवा वर्ग धर्म व समाज से विमुख होता जा रहा है और इसकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी परिवार की होती है कि वह बचपन से ही बच्चों को धर्म ध्यान की शिक्षा प्रदान करें जिससे वह अपने धर्म और समाज से जुड़े रहे। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'भारत' हमारे देश का मूल नाम है जो हमारी संस्कृति और विरासत से जुड़ा हुआ है। अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही होना चाहिए।

विशाल जी मूलतः अलीगढ़ के निवासी हैं। पिछले कई वर्षों से आप रामपुर में बसे हुए हैं। यहां आप कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हुए है। साथ ही रामपुर स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय रूप से सब आगे रहते हैं।

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

धन कुमार जैन
व्यवसाई व समाजसेवी
फरीदाबाद निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१०५८१५८८

धन कुमार जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि हमारे २४ तीर्थंकरों ने कभी दिगम्बर-श्वेताम्बर का विभाजन नहीं किया। यह तो कुछ असामाजिक तत्वों ने अपने लाभ के लिए हमारे साधु-संतों पर गलत आक्षेप लगाना प्रारंभ किया, वह नग्न विहार नहीं कर सकते, समाज में नहीं घूम सकते, इसलिए हमारे पूर्व के साधु-संतों ने वस्त्र धारण प्रारंभ कर लिया, लेकिन वे तीर्थंकर महावीर के ही अनुयाई बने रहे। समाज के जितने भी पंथ हैं सभी तीर्थंकर महावीर के अनुयाई हैं, वे पांचों कल्याण को मानते हैं पर परंपराएं व पद्धतियां अलग हो सकती हैं। पिछली जनगणना के अनुसार जैन समाज की आबादी लगभग ४५ लाख है पर मेरा मानना है कि यह करीब २ करोड़ के आसपास है क्योंकि समाज के कई बंधु हैं जो अपने उपनाम को लिखते हैं पर उन्हें जाति में 'जैन' लिखना चाहिए। हमारे जितने भी तीर्थ हैं उस पर अन्य धर्म और समाज द्वारा अतिक्रमण किया जा रहा है, इस समस्या का निवारण करने के लिए दिगम्बर अपने अनुसार से व श्वेताम्बर अपने अनुसार प्रयास कर रहे हैं, पर यदि यह प्रयास मिलकर किया जाए तो हम सफलता जरुर प्राप्त कर सकते हैं। वोट बैंक के हिसाब से देखा जाए तो हमारी संख्या कम होने के कारण भी राजनीतिक महत्व हमे नहीं मिल पा रहा है, इसीलिए हम जो बात रखना चाहते हैं, उसको सुनने वाला कोई नहीं है, इसलिए हमारे समाज में 'एकता' होनी जरूरी है। अतः समाज में एकता के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी एकता स्थापित हो सकती है।

आज का युवा वर्ग हमसे ज्यादा अकलमंद है व तार्किक है, वह प्रत्येक आचरण और क्रियाकलापों को तार्किक दृष्टि से देखता है, समाज में फैले आडंबर व दिखावों से वह दूर रहना चाहता है। अतः युवाओं को धर्म समाज से जोड़ने के लिए इन सब बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि मैं प्रारंभ से ही से जुड़ा रहा हूँ, अतः दिल से चाहता हूँ कि अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहे, क्योंकि इंडिया शब्द का यदि मूल्यांकन किया जाए तो यह एक गाली के रूप में प्रस्तुत होती है जो अंग्रेजों द्वारा दी गई हैं विश्व में किसी भी देश के २ नाम नहीं है तो हमारे देश का ३ नाम क्यों? अपने देश का भी नाम हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही 'भारत' ही रहना चाहिए, आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भी इसके लिए आव्हान किया है।

धन कुमार जी फरीदाबाद के प्रवासी हैं। मूलतः आप उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में स्थित जोला गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यही संपन्न हुई है। तत्पश्चात इंजीनियरिंग की शिक्षा आपने चंडीगढ़ से प्राप्त की। प्रसिद्ध कंपनी लार्सन एंड टूब्रो में मैकेनिकल इंजीनियर के पद पर सेवारत रहते हुए सेवानिवृत्ति प्राप्त की। वर्तमान में पुत्र के साथ टेक्सटाइल कारोबार से जुड़े हुए हैं। आपके एक पुत्र और एक पुत्री है। पुत्र टेक्सटाइल इंजीनियर है। सामाजिक कार्यों में भी आप सक्रिय रहते हैं। ब्लड डोनेशन कैंप, वैक्सीनेशन कैंप जैसे कई कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जन सेवा ही आपके जीवन का उद्देश्य है।

अरविंद कोठारी
अध्यक्ष विलेपार्ले तेरापंथ युवक परिषद
राजसमंद निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९०२९४०६११२

अरविंद जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना दृष्टिकोण रखते हुए कहते हैं कि हम सिर्फ बोलने के लिए कहते हैं पर कार्य नहीं करते इसीलिए जैन एकता स्थापित होना यह कठिन विषय है। सिर्फ कोशिश की जा सकती है। कोशिश यह रहनी चाहिए कि हमारी संवत्सरी व अन्य सभी पर्व एक साथ एक समय पर मिलकर मनाया जाना चाहिए और गुरु भगवंतो के द्वारा जैन एकता का निश्चित रूप से प्रयास करना चाहिए क्योंकि श्रावक गण उन्हीं के अनुयाई है अगर वे कहें तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से कटता जा रहा है और इसका मुख्य कारण आधुनिक जीवन शैली। बच्चों को यदि बचपन से ही ज्ञानशाला में भेजा जाए और अपने धर्म व समाज की शिक्षा दी जाए तो वे अवश्य ही जुड़े रहेंगे और आज की युवा पीढ़ी को हर चीज आसानी से चाहिए जबकि हमारा जैन धर्म त्याग और तपस्या का धर्म है। अतः युवाओं को धर्म समाज से जोड़ने के लिए उन्हें बचपन से ही शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए, तभी वह धर्म समाज से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि जहां तक अपनी संस्कृति और सभ्यता की बात आती है तो अपने देश का प्राचीन नाम 'भारत' ही रहा है जो हमारी संस्कृति व सभ्यता की परिचायक है। जिसे हमें बनाए रखना है। पर हमें नाम के साथ कार्यों को भी विशेष महत्व देना चाहिए जिससे हमारे देश की पहचान बने।

अरविंद जी मूलतः राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित गजपुर गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा मुंबई में ही संपन्न हुई। यहां व्यापार के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। विलेपार्ले तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। अन्य संस्थाओं में भी सक्रिय हैं।

टीकम चंद सेठिया जैन
अध्यक्ष अणुव्रत समिति कानपुर
छोटी खाटू निवासी-कानपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३६८४३७३९

'जैन एकता' के विषय पर अपना मत व्यक्त करते हुए टीकमचंदजी कहते हैं कि हमारे तीर्थंकरों ने 'जियो और जीने दो' का संदेश संपूर्ण विश्व को दिया, जो यह उस समय भी प्रासंगिक था और आज भी उतना ही प्रासंगिक है। आज के आपाधापी जीवन में हम इस उद्देश्य को अपनाते हुए अपना जीवन सफल कर सकते हैं। यदि समय रहते जैन समाज नहीं जागा तो हमारे जैन समाज का भविष्य खतरे में आ जाएगा, अतः अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज में 'एकता' बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म के नाम से कट रही है। यह बहुत ही चिंता का विषय है जबकि हमारे गुरु-भगवंतों ने कितनी तपस्या व त्याग के बाद यह मुकाम प्राप्त किया है। युवाओं की प्रवृत्ति बदलनी होगी, उन्हें कर्म के साथ-साथ धर्म को भी महत्व प्रदान करना होगा। धर्म से जुड़ेंगे तो समाज से जुड़ेंगे और युवाओं को धर्म समाज से जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है वही हमारा भविष्य है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह मर्यादा पुरुषोत्तम की धरती है, बुद्ध की धरती है, महावीर की धरती है, जो हमारी संस्कृति और सभ्यता की परिचायक है, अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। बिजय कुमार जैन जी के इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं और इसमें सबको सहयोग करना चाहिए, तभी यह अभियान सफल होगा।

टीकम चंद जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित छोटी खाटू के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षो से उत्तर प्रदेश में बसा हुआ है। आपका जन्म १९५३ को तेरापंथ समाज के श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्मृतिशेष कानमलजी सेठिया के आंगन में चिरगाँव झांसी में हुआ व संपूर्ण शिक्षा उत्तर प्रदेश में ही संपन्न हुई। पिछले कुछ वर्षों से आप कानपुर में बसे हुए हैं और मार्बल ग्रेनाइट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखते हैं। १ साल से ५ साल के जन्में बच्चे जो कि जन्म से ही बहरे व गुंगे होते है, उनके लिए कोकीलियर इम्प्लांट मशीन डॉ. रोहित मेहरोत्रा के सहयोग से जिसकी किंमत ६,३० लाख के करीब जो कि भारत सरकार से नि:शुल्क मिलती है, ८०० बच्चों के लिए यह सेवा कार्य लायन्स क्लब के साथ मिलकर कर रहें है। साक्षी फाउंडेशन, साई बाबा एज्युकेशन सोसायटी, वैश्य एकता परिषद व अन्य कई संस्थाओं के संरक्षक के रूप में कार्यरत है। बाबा रामदेव सेवा समिति, कानपुर नागरिक परिषद, अणुव्रत समिति कानपुर, कानपुर उद्योग व्यापार मंडल के भी अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। लायन्स क्लब ऑफ कानपुर गैन्जेज के पूर्व अध्यक्ष रहे है। कानपुर गल्ला अढ़तिया संघ के उपाध्यक्ष व ऑल इण्डिया रेल एण्ड एयर पैसेन्जर एसोसिएशन के मंत्री पद पर भी कार्यरत है। अन्य कई संस्थान से भी जुड़े हुए हैं।

सुनील कुमार जैन ठेकेदार
आगरा दिगम्बर जैन परिषद आगरा
आगरा निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१२२६४५४०

सुनील 'जैन एकता' के संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज समाज में एकता बहुत जरूरी है। एकता स्थापित होने से ही जैन समाज नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकेगा। आज कई बंधु हैं जो अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द नहीं लगाते, सर्वप्रथम अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लिखें, तभी हमारी वास्तविक संख्या का पता चलेगा और हमारा महत्व बढ़ेगा। आज हम अल्पसंख्यक में गिने जाते हैं। सबको एक साथ मिलकर चलना चाहिए, संगठन ही हमें आगे बढ़ाएगा। ना हम दिगम्बर ना हम श्वेताम्बर 'हम सब जैन हैं' इस सिद्धांत को अपनाना है। हमारी आने वाली पीढ़ी को भविष्य में किसी परेशानी का सामना ना करना पड़े, इसलिए भी समाज में 'एकता' बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी आधुनिक शिक्षा प्रणाली के कारण पाश्चात्य सभ्यता से अधिक प्रभावित हो रही है पर वर्तमान में यह भी देखने में आया है कि युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से अधिक जुड़ती जा रही है और मुनि महाराज के सानिध्य में युवा वर्ग आगे बढ़ रहा है। वह सामाजिक व धार्मिक कार्य में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है, हमारे समाज की हर महिलाओं की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वह बच्चों को बालकाल्य से ही हफ्ते में एक दिन तो देव दर्शन के लिए मंदिर में अवश्य ले जाएं क्योंकि जो मंदिर से जुड़ेंगे, वे अपने धर्म व समाज से अवश्य जुड़ा रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि इस बात पर कोई शक नहीं कि अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि प्राचीन काल से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है, इसका इतिहास साक्ष्य है। इंग्लिश नाम 'इंडिया' तो अंग्रेजों द्वारा किया गया है, भारत शब्द में हमें गर्व होना चाहिए। 'भारत' से हम भारत वासियों का आदर और सम्मान बढ़ जाता है। अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

सुनील जी मूलत: 'किरावली' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'किरावली' में संपन्न हुई, साथ ही गवर्नमेंट कांट्रेक्टर के रूप में कार्यरत हैं। साथ ही सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखते हैं। आगरा स्थित दिगम्बर जैन परिषद के महामंत्री पद पर सेवारत हैं।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

धीरज जैन
ज्वाइंट डायरेक्टर जनगणना विभाग
भारत सरकार
खतौली निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६८४४९८९०

धीरज जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जैन धर्म में जिन का अर्थ है सर्वज्ञ, वीतरागी व हितैषपदेशी। जैन धर्म का कोई भी संप्रदाय या पंथ हों, मार्ग भले ही अलग हों पर लक्ष्य एक ही है मोक्ष प्राप्ति। अतः सभी को पंथवाद छोड़कर एक छत्र के नीचे कार्य करने की आवश्यकता है, जबकि आज समय आ गया है कि युवा पीढ़ी पंथवाद को ना मानकर सिर्फ हम जैन है, इस सिद्धांत को मानती है और इस पर कार्य करती है, अतः भविष्य में यह संभावना है कि हम सिर्फ जैन रहें, ना दिगम्बर ना ही श्वेताम्बर क्योंकि युवा वर्ग किसी भी वस्तु को वैज्ञानिक रूप से अपनाना चाहता है और यह सिद्ध हुआ है कि जैन धर्म के जितने भी नियम हैं वह विज्ञान पर ही आधारित हैं और उसी को बाद में नोबेल पुरस्कार प्रदान कर दिया जाता है जैसे पौधे में जीवन है यह सिद्ध किया गया है पर यही बात महावीर भगवान ने ढाई हजार साल पहले ही सिद्ध की थी, अतः जैन धर्म के मूलतत्व को अपनाना चाहिए ना कि पंथवाद को, तभी हमारा समाज और धर्म दोनों ही बचा रहेगा। हमें जनगणना के दौरान धर्म के कॉलम में 'जैन' लिखना होगा तभी हमारी वास्तविक संख्या ज्ञात होगी।

आज की युवा पीढ़ी धर्म समाज से विमुख होती दिखाई दे रही है इसका कारण यह है कि वह उनको धर्म परिपेक्ष सही तरीके से नहीं समझा पा रहे, वह हर चीज का प्रमाण मांगती है और उन्हें प्रमाण देना व समझाने के लिए तैयार रहेंगे तो ही वह धर्म समाज से जुड़ी रहेगी। हमारे तीर्थंकरों द्वारा जो बात कही गई है वह साक्ष्य के साथ प्रस्तुत करना होगा तभी वे धर्म के वास्तविक मर्म को समझ पाएंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं क्योंकि हमारी भूमि भरत की भूमि है और उन्हीं के नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' रखा गया, अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

धीरज जी मूलतः उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में स्थित खतौली के निवासी है, आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई। वर्तमान में आप भारत सरकार में जनगणना विभाग के ज्वाइंट डायरेक्टर के रूप में सेवारत है, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते है। आपके द्वारा एक वेबसाईट बनाई गयी है। जिसमें ७३०० जैन मंदिरों का विवरण प्रस्तुत किया गया है ताकि जैन समाज के बंधु कहीं भी जाएं उन्हें जैन मंदिरों की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके। आपका यह प्रयास सराहनीय है और इससे सभी जैन पंथों के बंधुओं को सुविधा होगी।

अशोक जैन
पूर्व अध्यक्ष, दिगंबर जैन परिषद आगरा
आगरा निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३७२९२१८६

अशोक जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जैन समाज को अपना महत्व व प्रभाव बनाए रखने के लिए समाज में एकता लाना जरूरी है और विशेषकर राजनीतिक महत्व स्थापित करने के लिए क्योंकि जनसंख्या जिसकी सबसे अधिक होती है, उसका राजनीतिक प्रभाव भी अधिक होता है। अतः सर्वप्रथम समाज के सभी बंधुओं को यह करना चाहिए कि अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लिखें, इसी से हमारी वास्तविक संख्या ज्ञात होगी। कहने को तो हमारी आबादी ५० लाख के करीब है पर वास्तविक रूप से देखा जाए तो हमारी जनसंख्या १ करोड़ से अधिक है। हम कहीं भी सिर्फ अपना गोत्र, उपनाम लिखते हैं, साथ ही हमे 'जैन' भी अवश्य रूप से लिखना चाहिए। 'ना हम दिगम्बर ना हम श्वेताम्बर है, हम सिर्फ जैन हैं', इसी को मानना चाहिए। इसी से ही सामाजिक, राजनीतिक रुप से हमारा महत्व बढ़ेगा और हम अपनी बात प्रभावी ढंग से रख पाएंगे। साथ ही जैन समाज के राष्ट्रीय स्तर की जितने भी संस्थाएं हैं, वे अपना सामंजस्य बिठाकर इस दिशा में विशेष का प्रयास करें तो ही जैन एकता स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी है, वह अपने धर्म और समाज से उत्साह जनक रूप से जुड़ी हुई है। उनका धर्म समाज से लगाव बना हुआ है पर अपनी नौकरी व अन्य कारणों से जिनका बाहर रहना होता है वे धार्मिक कार्यों में समय नहीं दे पाते। दूसरा अन्य जातियों में विवाह संबंध स्थापित करते हैं। यह भी एक चिंताजनक विषय है। क्योंकि इससे भविष्य में अन्य कई समस्याओं का निर्माण होगा, जिसे रोकने की आवश्यकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि सैकड़ों सालों से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है, जो हमारी संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा हुआ है, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा दिया गया नाम है। अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही होना चाहिए और इसके लिए सरकार पर भी दबाव बनाना होगा, तभी यह कार्य सफल हो पाएगा।

अशोक जी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा आगरा में संपन्न हुई। पिछले ४५ वर्षों से आप वकालत के क्षेत्र में कार्यरत है। पूर्व में आप आगरा के डिप्टी मेयर व कॉरपोरेटर भी रहे हैं। साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते है। आगरा की दिगंबर जैन परिषद् में १० सालों से अध्यक्ष पद पर सेवारत रहे। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

निकुंज चोपड़ा जैन
प्रमुख सचिव जीतो गांधीधाम
कानाना निवासी गांधीधाम प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८७९५३०२४५

निकुंज जी का 'जैन एकता' के बारे में मंतव्य यह है की यह परिकल्पना तब तक संभव नहीं है, जब तक सभी श्रावक एक नहीं हो जाते। हम मानते है कि हम भगवान महावीर के अनुयायी है और उनके सिद्धांत पर चलते है पर वैसा हमारा आचरण नहीं है। अगर होता तो अब तक हम एक हो चुके होते क्योंकि हमारी एकता में हमारा अभिमान, अपने नाम का ममत्व और सत्ता की भूख हमसे नहीं छोड़ी जा रही है। अगर एक हो गए तो फलाना अध्यक्ष बन जायेगा, मैं उससे काम थोड़ी हूँ। दूसरा है संघ मान्यता क्या परिवार को एक जुट करने क लिए हम कुछ चीजे छोड़ नहीं सकते, पर हम यह करना नहीं चाहते है। हमारी एक और बड़ी समस्या है अंतर जातीय शादिया जिन्हे हम रोक नहीं सकते क्योंकि हम एक नहीं है। इसका एक उपाय जो मुझे लगता है, वह यह है सभी को एक मंच पर लाना और उन्हें सम्मान से ऊपर उठाना, जैसे शिक्षा, व्यापर और मकान की मूल भूत व्यवस्था उनके लिए खड़ी करना। अपने असक्षम परिवारों को सक्षम बनाना। यह भावना तभी बन सकती है।

इंडिया नहीं भारत : I – Independent N – Nation D – Declared I – In A – August, जिस भारत की आजादी के लिए लाखों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उस महान भारत वर्ष परंपरा को अंग्रेजो ने जाते-जाते भी अजीब सा नाम दे दिए। सिर्फ सोचे अगर हमें आजादी जून या मई में मिल जाती तो हमारा नाम कुछ अलग होता , क्या हमारी पहचान वो महीना है या उन लाखों लोगों की कुरबानी, जो उन्होंने महान भारत बनाने के लिए दी थी, क्या उनकी कुरबानी के साथ यह मजाक नहीं है।

मैं आप सभी को दिल से आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने इस महत्वपूर्ण मुलभुत प्रश्न को उठाया है, आज आजादी की ७५ वर्ष बाद भी हम अंग्रेजो के उस दिए नाम से आजाद नहीं है जिसके लिए लाखो देश प्रेमियों ने अपने प्राणो की आहुति 'भारत माता' के चरणों में चढ़ा दी थी। हम हिन्दू राष्ट्र है और हमारे देश का नाम 'भारत' ही होना चाहिए।

निकुंज जवाहरचंद चोपड़ा का अस्तित्व और जन्मभूमि राजस्थान में कानाना (बालोतरा के पास में) गांव है, यह वह गौरवशाली गांव जो वीर दुर्गदासजी राठोड़ के पराक्रम से जाना जाता है। आपका शिक्षण गांधीधाम कच्छ गुजरात में हुआ है, कर्मभूमि गांधीधाम है, व्यापार में आपका परिवार विक्रम ग्लास ग्रुप से जाना जाता है। व्यापार प्लाईवुड, हार्डवेयर, ग्लास, एल्युमीनियम, FMCG, कंस्ट्रक्शन से जुड़े हुए है। सामाजिक दायित्व में तेरापंथ युवक परिषद् के उपाध्यक्ष, जैन इंटरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन में महा सचिव, जैनम नवयुवक मंडल में सचिव, श्री राजस्थान जैन नवयुवक मंडल में ट्रस्टी, जैन सोशल आर्गेनाइजेशन में कारोबारी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (RSS) के स्वयं सेवक के रूप में अपनी जवाबदारी का निर्वाह कर रहे है।

यह मेरा निजी मतव्य है अगर किसी भी रूप में मैंने किसी के दिल को आहत किया हो तो मिच्छामि दुक्कडम।

दिनेश जैन सेठी
प्रबंधक जैन इंटर कॉलेज रामपुर
रामपुर उत्तर प्रदेश निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१०८७२३३३

दिनेश जी 'जैन एकता' के संदर्भ में कहते हैं कि जैन एकता आज जैन समाज के लिए सबसे जरूरी विषय है क्योंकि हमारी संख्या कम है उस पर भी हम कई पंथ और संप्रदाय में बंटे हुए हैं। जिससे हमारी स्थिति दयनीय होती जा रही है। हमारा सामाजिक व राजनीतिक रूप से महत्व कम होते जा रहा है। अतः सभी जैनी भाइयों से मेरी यही अपील है कि हम जहां भी रहे, जिस भी हालत में रहे, मिलजुल कर रहे और एक परिवार की तरह रहे और जब भी किसी को जरूरत हो तो उसकी सहायता के लिए तत्पर रहें। जिससे हमारा समाज मजबूत होगा। हम एक अच्छे समाज का संदेश अन्य के सम्मुख रख पाएंगे। अतः समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, हमें पंथ को छोड़ जैन को सर्वोपरि रखना चाहिए। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती जा रही है। इस पर हमें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि वह ना तो भगवान के अभिषेक पर ध्यान देती है, ना पूजा पाठ पर। अपने धर्म और समाज से जोड़े रखने के लिए उन्हें सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आप का कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' होना चाहिए क्योंकि यही हमारी पहचान है।

दिनेश जी का परिवार कई पीढ़ियों से रामपुर में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा रामपुर में ही संपन्न हुई। रामपुर स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं। रामपुर स्थित जैन इंटर कॉलेज के प्रबंधक के रूप में कार्यरत है। जैन समाज रामपुर के शिक्षा मंत्री पद पर भी सेवारत है।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

रमेशचंद जैन सेठी
बाग मंत्री जैन समाज रामपुर
रामपुर उत्तर प्रदेश निवासी
भ्रमणध्वनि: ७४५४८९५१६६

रमेशचंद जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में एकता बहुत जरूरी है। दिगम्बर, श्वेतांबर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, बाईस पंथी, इन सब को छोड़कर सभी समाज के लोगों को एक साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है और इसके लिए हमें यह प्रयास लेकर चलना चाहिए कि सरकार द्वारा जैन समाज की संख्या नगण्य हो चुकी है। जैन समाज में जो व्यापारिक वर्ग और आर्थिक रूप से संपन्न है। उन लोगों को सर्वप्रथम आर्थिक रूप से असक्षम लोगों को सहयोग करें या गुप्त दान देकर आगे बढ़ाना चाहिए। अगर हम इन्हें मजबूत नहीं करेंगे तो एक दिन ऐसा आएगा कि हम पूरी तरह से बिखर जाएंगे और कोशिश यह भी रखे की अपनी बेटी का विवाह जैन परिवार में ही करें। इन सब कार्यों से हमारा समाज मजबूत बनेगा और हम आगे बढ़ते जाएंगे।

आज की युवा पीढ़ी का अपने धर्म व समाज से दूर होने का प्रमुख कारण है कि वे शिक्षा प्राप्ति के लिए अन्य शहरों में जाकर बसते हैं और वे अन्य धर्म व समाज के बच्चों के संपर्क में आते हैं जिससे वे अपने धर्म और समाज से विमुख होते चले जाते हैं और जो बच्चे परिवार में रहते हैं, वे अपने संस्कार व धर्म समाज सभी से जुड़े रहते हैं। अतः युवाओं को धर्म व समाज से जोड़े रखने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी परिवार की है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आप का कहना है कि इंडिया एक अंग्रेजी नाम है जो ब्रिटिश सरकार द्वारा दिया गया है और 'भारत' शब्द हमारी संस्कृति और सभ्यता से जुड़ी हुई है और चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से इस देश का नाम भारत रखा गया। अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही होना चाहिए।

रमेशचंद का जन्म और संपूर्ण शिक्षा रामपुर में ही संपन्न हुई है। आप यहां कई सामाजिक कार्यों में सतत सक्रिय रहते है। रामपुर स्थित डेढ़ सौ परिवारों के जैन समाज के समिति से जुड़े हुए हैं और इस समाज द्वारा हॉस्पिटल व कन्या विद्यालय जैसे कई संस्थाओं का निर्माण किया गया है। इस संस्था द्वारा कई सामाजिक क्रियाकलाप किए जाते हैं, जैन समाज रामपुर के बाग मंत्री के रूप में कार्यरत है।

पंकज कांकरिया
प्रमुख सचिव, जीतो कोलकाता
नागौर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३१३ ५६७६९

पंकज जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन एकता बहुत जरूरी है। एक तो हमारी संख्या कम है उसमें भी हम कई पंथो और संप्रदायों में बंटे हुए हैं। इसी के कारण हमारे देश में हमें जो सामाजिक और राजनीतिक महत्व मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पा रहा है। सभी अपने-अपने पंथ, संप्रदाय में ही लगे हुए हैं। जैन समाज एक बहुत बड़े व्यापारिक समाज के रूप में विख्यात है, पर कोरोना काल के दौरान यह देखा गया कि दिगम्बर अपने संप्रदाय और समाज के बंधुओं को सहयोग कर रहे थे तो श्वेताम्बर अपने समाज बंधुओं को सहयोग प्रदान कर रहे हैं जिससे सामाजिक व धार्मिकता एकता का वास्तविक संदेश नहीं दे पाए थे। अगर हम यही कार्य मिलकर करते तो हमारी पहचान ही अलग होती।

अतः अपने समाज व अपने धर्म के महत्व को स्थापित करने के लिए हम सभी को एक साथ आना ही होगा और जैन एकता स्थापित करनी होगी।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से बहुत दूर होती दिखाई दे रही है। आज हम देखते हैं कि सभी धर्म और समाज के लोग चाहे कहीं भी रहें, वे अधिकतर अपनी मातृभाषा का ही उपयोग करते हैं पर सिर्फ राजस्थानी समाज ही ऐसा है जो आज हिंदी और इंग्लिश को ज्यादा महत्व प्रदान कर रहा है और अपनी भाषा को छोड़ते जा रहा है। सर्वप्रथम हमें अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े रहने की आवश्यकता है। जो मंदिरमार्गी या मूर्ति पूजक हैं, वे देवस्थान में जाकर देव दर्शन कर लेते हैं और इसी तरह वे धर्म समाज से जुड़ते हैं पर अन्य समाज नहीं जुड़ पाते। उनके लिए घर ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। अपने धर्म समाज से जुड़े रहने के लिए हमारे बड़े-बुजुर्ग धर्म की बातों का ज्ञान करवाते हैं। समाज के साधु-संत हमें सही मार्ग बताते हैं। इसी तरह हम युवाओं को अपने धर्म समाज से जुड़े रख सकते हैं।

हमारे देश 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' ना कि इंडिया विषय पर आपका कहना है कि अपने देश का नाम 'भारत' ही होना चाहिए और इसके लिए संपूर्ण भारत में जागृति लानी होगी। विशेष कर सरकार को इस दिशा में कार्य करना होगा। तभी यह कार्य सफल होगा।

पंकज जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित गोगेलाव के निवासी है। आप का परिवार कई वर्षो से कोलकाता में बसा हुआ है। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता में ही संपन्न हुई। तत्पश्चात उच्च शिक्षा आई.आई.एम. अहमदाबाद से की। पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात आप माइनिंग के कारोबार से जुड़े। पिछले १० वर्षों से जीतो से जुड़े हुए हैं और वर्तमान में कोलकाता जीतो के प्रमुख सचिव के पद पर सेवारत है। साथ ही अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

अजीत ओसवाल जैन
चेयरमैन जीतो दावणगेरे
सिरोही निवासी-दावणगेरे कर्नाटक प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४९८३६१६४

अजीत जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि एकता तो बहुत जरूरी है क्योंकि एकता के बगैर हमारा कोई अस्तित्व नहीं है और इसके लिए जितने भी गुरु भगवंत हैं उनसे भी हमारी यही प्रार्थना है कि इस दिशा में विशेष प्रयास और मार्गदर्शन करें। तभी जैन एकता संभव होगी साथ ही इसके लिए समाज के सभी संस्थाओं को विशेष भूमिका निभानी होगी।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से विमुख होता जा रहा है और इसका कारण यह है कि वह धर्म से जुड़ी पुजा-पद्धतियों को ही धर्म समझ रहा है। धर्म का वास्तविक महत्व व धर्म क्या चीज है इस बारे में वह जानता ही नहीं। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह व ब्रम्हचर्य मोक्ष के मार्ग हैं मोक्ष नहीं, पर युवा पीढ़ी इसे ही मोक्ष समझ रही है उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए इस विषय पर आप का कहना है कि भारत एक भूखंड का नाम है और 'भारत देश' या 'भारतवर्ष' हमारी संस्कृति हमारी सभ्यता की परिचायक है जो पूर्णता:वास्तविक अर्थ को प्रदर्शित करता है। अतः अपने देश का नाम 'भारत वर्ष' हो यही कामना करता हूँ।

अजीत जी मूलत: राजस्थान के सिरोही के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा दावणगेरे में संपन्न हुई, यहां आप ऑप्टिकल्स लेंस के बिजनेस से जुड़े हुए हैं। साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सतत सक्रिय रहते हैं। आर. एस. एस. से हमेशा से ही जुड़े हैं। भगवान महावीर जैन हॉस्पिटल में भी सक्रिय सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। जीतो के चेयरमैन के पद पर कार्यरत हैं अन्य कई जुड़े हुए हैं।

-जिनागम

परंपरा के अनुसार भगवंत का अभिषेक करें-आचार्य मयंक सागर महाराज

श्री क्षेत्र जैनगिरी जटवाड़ा में वार्षिक यात्रा में भगवंत के महामस्तकाभिषेक में पहुंचे श्रद्धालु औरंगाबाद। श्री १००८ संकटहर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र जटवाड़ा में हर साल की तरह गुरुवार को भगवान पार्श्वनाथ के २७९८वें जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में वार्षिक महोत्सव का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर उपस्थित समाज बंधुओं को मार्गदर्शन करते हुए आचार्य मयंक सागर महाराज ने कहा कि भगवंत का महामस्तकाभिषेक पारंपरिक तरीके से करना चाहिए।

आचार्य ने कहा कि जिस मंदिर में जो अभिषेक पद्धति जारी है, उसी पद्धति से भगवंत का अभिषेक करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवंत और गुरु की वाणी आत्मसात करने पर मनुष्य जीवन का कल्याण होगा। मनुष्य को अपने जीवन में संयम धारण करना चाहिए। मनुष्य जीवन दुर्लभ है और जिनवाणी शास्त्र का पाठ करने से मनुष्य का कल्याण होगा। मनुष्य को चाहिए कि वह आने वाले संकट से घबराएं नहीं, बल्कि उनका सामना करें और अपना जीवन आगे ले जाएं। उन्होंने जैनगिरी क्षेत्र के विकास के लिए सभी समाज बंधुओं को एकजुट होकर तन-मन-धन से काम करने का आह्वान किया। आचार्य ने वर्ष २०२२ का चातुर्मास जटवाड़ा में होने के लिए श्रीफल अर्पण किया। शाम को शास्त्र पाठ और आरती की गई। वार्षिक यात्रा महोत्सव को देखते हुए मंदिर में आकर्षक सजावट की गई थी। जैनम और नवग्रह जूम एप के माध्यम से सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भगवंत के दर्शन किए। आचार्य मयंकसागर महाराज, मुनिश्री मोक्षसागर महाराज, मुनिश्री अर्पणसागर महाराज की उपस्थित में हुए। कार्यक्रम की प्रस्तावना क्षेत्र के महामंत्री देवेंद्र काला ने रखी। इस अवसर पर डॉ रमेश बड़जाते, प्रकाश कासलीवाल, सुरेंद्र साहुजी, ललित पाटणी, एड एमआर बड़जाते, जयचंद ठोले, कमल कासलीवाल, रमणलाल आर गंगवाल, अशोक गंगवाल, मनोज चांदीवाल, संजय पाटणी, नरेंद्र अजमेरा, विजय पहाड़े, दिलीप सेठी, वैभव साहुजी, अशोक अजमेरा, सुधीर साहुजी, संजय साहुजी आदि उपस्थित थे।

-पियुष कासलीवाल नरेंद्र अजमेरा

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

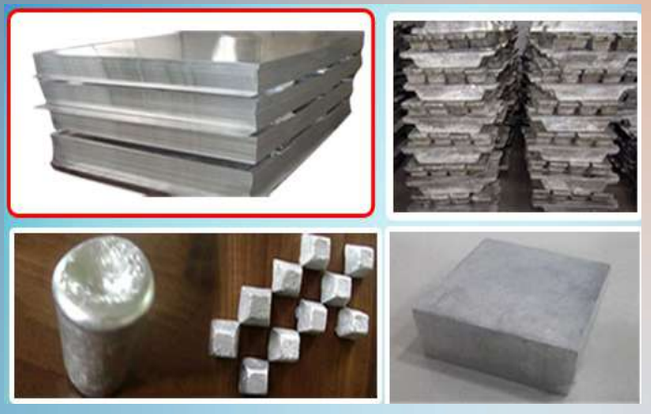

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

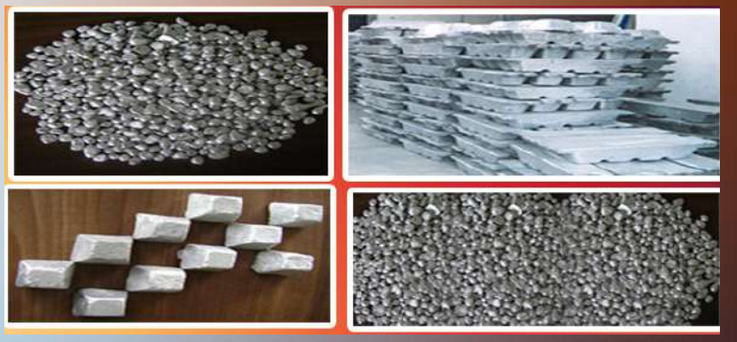

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT
FEATURES :
• Automatic start, stop and clear.
• With Batch, Add and Self-checking functions.
• UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
• Automatic half-note, chained note detecting.
• Double-note detecting with IR.
• LCD turns red when detects fake note.
SPECIFICATIONS :
• Counting Display : 4 digits
• Batch Display : 3 digits
• Counting speed : 1000pcs/min
• Hopper Capacity : 300 notes
• Stacker Capacity : 200 notes
• Size of countable note : 50*110-90*190mm
• Power Supply : AC220V±10% 50Hz
• Power Consumption : ≤ 80W
• Size of box : 375*333*251 mm
KUSAM-MECO An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada, Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३९ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
www.samratjewellers.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान में
बिजय कुमार जैन जी आप आगे बढ़ें हम सभी आपके साथ हैं...
भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

भारत ने विश्व को बहुत कुछ दिया है : पीएम भारद्वाज

जयपुर/समाचार जगत न्यूज: भारद्वाज फाउंडेशन जयपुर व क्रैडेंट टीवी के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को राष्ट्रवाद का महत्व' विषयक ऑनलाइन वेबिनार आयोजित की गई। इस विषय पर बोलते हुए आयोजन के मॉडरेशन राष्ट्रीय स्तर पर के मोटिवेशनल व मैनेजमेंट गुरू पीएम भारद्वाज ने कहा कि हमारा देश भारत वर्ष पूर्व में विश्व गुरू व सोने की चिड़िया था। हमारे देश का इतिहास व संस्कृति बहुत ही गौरवशाली है। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देश में राष्ट्रवाद की बेहद कमी है एवं युवाओं को भारत वर्ष के इतिहास एवं संस्कृति के बारे में बहुत कम जानकारी है। पीएम भारद्वाज ने कहा कि हमारे देश भारत की विश्व को बहुत सारी देन है। उन्होंने बताया कि भाषा, लिपि, चिकित्सा तकनीकी एवं अन्य क्षेत्रों में भारत ने विश्व की बहुत बड़ी मदद की है। इस मौके पर 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी,एलन कैरियर इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. गोविंद माहेश्वरी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा ने भी अपने विचार व्यक्त रखे।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

Issue Opens : 01-09-2021
Issue Closes : 03-09-2021
Price Band : 603 – 610
Market Lot : 24 Shares & in Multiples

AMI ORGANICS LIMITED

Total Issue Size: ~ Rs 670 Crores
a) Pre IPO : ~ Rs 100 Crores
b) Anchor : ~ Rs 170 Crores
c) Main Book : ~Rs 400 Crores*

THANK YOU INVESTORS FOR OVERWHELMING RESPONSE

IPO SUBSCRIBED 64.54 TIMES*

TOTAL BID RECEIVED : ~ Rs. 25,733 Crores* (@ Upper Band)

* Excluding Pre IPO & Anchor Investors of Rs. 270.89 Crores

QIB	HNI	RETAIL
86.02 TIMES	155.40 TIMES	13.32 TIMES

as per www.bseiindia.com and www.nseindia.com dt. 3rd Sept, 21 @ 5 pm

Intensive
Investment Banking & Corporate Finance
www. intensivefiscal.com

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा

इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

mailgaylordgroup@gmail.com

Postal Registration Number - MCN/192/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2021-23
'License to post without prepayment'
Published on 09th February 2022 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

ONLY ₹50/- PER PC

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598